श्रीः

रुद्रयामलतन्त्रम्

भाषाटीकासहित

☆

अथ रुद्रयामलं च कथयामि विशेषतः ।।
गौरीं सरस्वतीं शंभुं प्रणम्य शिरसा पृथक् ।। १ ।।

अब हम गौरी तथा सरस्वती और शंभुजीकोशिरसे अलग अलग प्रणाम करके रुद्रयामल कहते हैं ।।१।।

तत्रादौ सर्वजनानां वशीकरणमुत्तमम् ।।
यतचित्तेन च जपेन्मंत्रं विंशसहस्रकम् ।। २ ।।

इसमें आदिमें सब जनोंका वशीकरण कहते हैं । उत्तम यतचित्त होकर बीस हजार मंत्र जपे ।।२।।

चंदनं वटमूलं च जलेन पेषयेत्समम् ।।
विभूतिसंयुक्तकृतं भाले तिलकमेव च ।। ३ ।।

चंदन, वटकी मूल जलमें पीस समान विभूति मिलाके मस्तकमें तिलक देवे तो वश्य होय ।।३।।

पुष्ये पथसंगामूलं रुद्रवंतीं तथैव च ।।
जवमूलं समादाय कुमार्या सूत्रनिर्मितम् ।। ४ ।।
सूत्रेण बंधयेद्धस्ते वामे स्त्री दक्षिणे पुमान् ।।
तदा सर्वे वशीभूता भविष्यंति न संशयः ।। ५ ।।

पुष्पनक्षत्रमें यथर्सगाकी मूल रुद्रवंती जवकी मूल ले कुमारीके काते सूतमें पुरुषके दहिने स्त्रीके बांये हाथमें बांधे तो सब वशीभूत होंय इसमें संदेह नहीं है ॥४॥५॥

मंत्रः। ॐर्येपरक्षोभयंभगवती गंभीर रेछ स्वाहा ॥

अंधझारस्य मूलं च गोरोचनसमन्वितम् ॥

जलेन पेषयेच्चैव तिलकं कारयेद्बुधः ॥

त्रैलोक्यं च वशीभूतं नात्र कार्याविचारणा ॥ ६ ॥

इस मंत्रका २०००० जप करे । आंधे झारकीमूल गोरोचन मिलाय कर पानीमें पीसकर तिलक करे तो तीन लोक वश होंय इसमें विचार न करना ॥६॥

मंत्रः ॐ नमो नमो कदसंवारीनि सर्वलोकवश्यकरी स्वाहा ॥

अष्टोत्तरशतं चैव जपेन्मंत्रं समाहितः ॥

मंत्रसिद्धिस्तदा यातः सर्ववश्यकरः परः ॥ ७ ॥

इस मंत्रका १०८ जप करे तो मंत्रसिद्धि होती है, सब वश्य होते हैं ॥७॥

शनैश्चरोपवासं च कृत्वा च विधिपूर्वकम् ॥

उत्तराभिमुखो भूत्वा चोद्धृत्य च शुचि तरुम् ॥ ८ ॥

शनिका व्रत कर विधिसे उत्तरमुख बैठके इंद्रायनको उखाडे ॥८॥

पंचांग च समानीय च्छायाशुष्कं तु कारयेत् ॥

पिष्ट्वा शुंठीं पिप्पलीं च मरिचं च समानयेत् ॥ ९ ॥

पंचांग ले छायामें सुखाके पीसकर सोंठ पिप्पली मिरच मिलाकर॥९॥

अजामूत्रेण संपेष्य छायाशुष्कां वटीं न्यसेत् ॥

रक्तचंदनपानीयं तेनैव नाम वै लिखेत् ॥
सोपि वश्यो भवेत्सद्यो नात्र कार्याविचारणा ॥ १० ॥

बकरीके मूत्रमें पीस वटी बनाके छायामें सुखावे और रक्तचंदनके पानीसे चिस नाम लिखे सो वश होय इसमें कुछ विचार नहीं है ॥१०॥

देवदारुं चंदनं च वटिकां च तथैव च ॥ ११ ॥
जलेन पेष्य पंचैव खादयेत्सुमाहितः ॥
सोऽपि वश्यो भवत्येव महादेव प्रसादतः ॥ १२ ॥

देवदारु सफेद चंदन और वटी जलमें पीस खवावे तो वह महादेवके प्रसादसे वश्य होय ॥११॥१२॥

पुनर्वटीं समादाय गोरोचनसमन्विताम् ॥
जलेन तिलकं कृत्वा यत्र गच्छति सिद्धिदः ॥ १३ ॥

फिर वटी और गोरोचन जलमें मिलाकर तिलक करे तो जहां जाय तहां सिद्धि होय ॥१३॥

मंत्रः । ॐ नमः सर्वार्थसाधनी स्वाहा ।
मंत्रेदं प्रथमं जप्त्वा सहस्रवारकम् ॥
कार्यसिद्धिकरं चैव सर्वथा सिद्धिकारकम् ॥ १४ ॥

इस मंत्रको १००० जपे तो कार्यसिद्धि होय ॥१४॥

अन्यप्रयोगः

कृष्णपक्षस्य चाष्टम्यं चतुर्दश्यामुपोष्य वै ॥
बलिं दत्त्वा च चोद्धृत्य सहदेवी समाहितः ॥ १५ ॥

कृष्णपक्षकी अष्टमी वा चतुर्दशीका व्रत कर सहदेईको उखाडे ॥१५॥

चूर्णयित्वा च यं चैव तांबूलेनैव खादयेत् ।।
सोऽपि वश्यो भवेत्सद्यो भगवत्याः प्रसादतः ।। १६ ।।

चूर्ण कर तांबूलमें खवावे तो भगवतीके प्रसादसे वश्य होय ।।१६।।

स्नानं कृत्वा तु यत्नेन यस्योपरि च क्षिपेत् ।।
गोरोचनेन संयुक्तां सहदेवीं जलेन च ।। १७ ।।
तिलकं कृत्वा तु भाले वशीभूतास्तथापि च ।।
सहदेवीचूर्णकं च मस्तके यस्य निक्षिपेत् ।।
सोऽपि वश्यो भवेत्सद्यो नात्र कार्या विचारणा ।। १८ ।।

स्नान कर जिसके ऊपर छोड देय सो वश्य होय ।

गोरोचन सहदेवी जलमें मिलाकर मस्तकमें तिलक करे और जिसके सामने जाय तो वश्य होय वा सहदेवीका चूर्ण मस्तकपर छोड़ देय तो शीघ्रही वह वश होय इसमें संशय नहीं ।।१७।।१८।।

सहदेव्याश्च मूलं च मुखे निक्षिप्य यत्नतः ।। १९ ।।

सहदेवीका मूल यत्नसे मुखमें राखे तो वश्य होय ।।१९।।

कुमारीनिर्मिते सूत्रे मूलं संबध्य यत्नतः ।।
स्त्रियाः कट्यां च बंधेत तदा भोग्यवती भवेत् ।। २० ।।

कुमारीके काते सूत्रमें मूल बांध स्त्रीके कटिमें बांधे तो स्त्री भोगके योग्य होय और वश्य होय ।।२०।।

मंत्रः ॐ नमो भवगती कुमंगलेश्वरी-
सुखराजिनी सर्वधरमातंगी कुमारीक लघु
लघु वलं कुरु कुरु स्वाहा। सहस्रं च
जपेन्मंत्रं तदा सिद्धिर्भविष्यति ।। २१ ।।

इस मंत्रको १००० पढ़िले जपे तो सिद्धि होय ।।२१।।

अन्यप्रयोगः ।

श्वेतशरपुंखमूलं पेषयेच्च जलेन वै ॥
चंद्रस्य ग्रहणे चैव समुद्धृत्य विधानतः ॥ २२ ॥

चंद्रके ग्रहणमें विधानसे सफेद सरपुंखाकी जड लाकर जलके संग पीसे ॥२२॥

नेत्रे चैवांजनं कुर्यात्सर्वथा विधिना तथा ॥
जगत्त्रयं तदा वश्यं राजानश्च प्रजास्तथा ॥ २३ ॥

और नेत्रोंमें अंजन करे तो तीन लोकमें राजा प्रजा वश्य होय ॥२३॥

मुस्तामूलं समादाय मुखे संस्थाप्य यत्नतः ॥
यस्य नाम च संब्रूयात्सोऽपि वश्यो भवेत्तदा ॥ २४ ॥

मुस्ताकी जड मुखमें रख जिसका नाम लेय सो वश्य होय ॥२४॥

मनःशिलं गोरोचनं मुस्तामूलं जलेन वा ॥
तिलकं कारयेद्योपि नाम ब्रूयाद्यथा हि सः ॥ २५ ॥

मनसिल, गोरोचन, मुस्ताकी जड़ जलमें पीस तिलक कर जिसका नाम ले सो वश्य होय ॥२५॥

मुस्तामूलं सुवर्णेन बध्नाति दक्षिणे करे ॥
तदा प्राणसुखी भूयात् धनं च बहुधा भवेत् ॥ २६ ॥

मुस्ताकी जड सुवर्णमें मढाय दक्षिण हाथमें बांधे तो प्राण सुखी रह तथा बहुत प्रकारका धन होय ॥२६॥

मुस्तामूलं चंदनेन तिलकं च विधानतः ॥
कृत्वा तस्य दर्शनाच्च वशीभूतो नरोथवा ॥ २७ ॥

मुस्तामूलको चंदनमें मिलाकर तिलक करे तो जो देखे सो नर वा स्त्री वश्य होय ॥२७॥

मंत्रः । ॐ वज्रकरण शिवे रुध रुध भवे
ममाई अमृत कुरु कुरु स्वाहा ।
सहस्रैकं जपेन्मंत्रं पश्चाच्च गृहणात्यौषधीम् ॥
तदा सिद्धिर्भवेत्तस्य नान्यथा सिद्धिरुच्यते ॥ २८ ॥

इस मंत्रको हजार वार जपे पीछेसे औषध ले तो सिद्ध होय और तरहसे सिद्धि नहीं कही है ॥२८॥

उच्छिष्टचांडालीप्रयोगः ।

एकांते भोजनं चैव कुंकुमादिसमन्वितम् ॥
केशरं चंदनं चैव गोरोचनमथापि च ॥ २९ ॥
गोदुग्धेन समाश्लिष्य कर्पूरेण समन्वितः ॥
एषां तिलकमात्रेण नृपो वश्यो भवेत्तदा ॥ ३० ॥

एकांतमें भोजन करे, कुंकुम, केशर, गोरोचन, चंदन, कर्पूर, गोदुग्धमें मलाकर तिलक करे तो राजा वश्य होय ॥२९॥३०॥

मंत्रः । उच्छिष्टेच्छिष्टा चांडाली सती वाकं फुरो मंत्रय स्वाहा॥ मंत्रणानेन चाश्लेष्य चौषधीं च विशेषतः ॥३१॥

इस मंत्रसे औषधि अभिमंत्रित करे तब सिद्ध होय ॥३१॥

मंत्रः । ॐ ह्रीं अमुकं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।
मंत्रेदं तु सहस्रैकं जप्त्वा पूर्वं समाहितः ॥ ३२ ॥
वटीं बध्नात्यौषधीनां वदत्यन्यस्य नामकम् ॥
जलेन तिलकं कृत्वा तदा वश्यो भवेन्नृपः ॥ ३३ ॥

इस मंत्रको पहिले हजार वार पढ़कर फिर औषधियोंकी वटी बनाकर जिसका नाम ले तिलक करे तो वह राजा वश होय ।।३२।।३३।।

घृतं दुग्धं शर्करां च दधिमधुकमेव च ।।
कमलपुष्पपत्राणि शतानि च विशेषतः ।।
रात्रौ च हवनं कुर्याच्चक्रवर्त्तीवशो भवेत् ।। ३४ ।।

घृत दुग्ध शक्कर दही सहत कमलपुष्पके पत्र १०० रात्रिको हवन करे तो चक्रवर्ती वश होय ।।३४।।

गोभीं मयूरशिखां च मुखे वा शिरसि क्षिपेत् ।।
वादे चैव तथा वेदे जयमाप्नोति मानवः ।। ३५ ।।

गोभी मयूरशिखा मुखमें वा शिरमें रखे तो वादमें वा वेदमें जय पावे ।।३५।।

मार्गशीर्षस्य पूर्णायां मूलमुद्धृत्ययत्नतः ।।
मयूरपिच्छस्य बध्नीयाद्धस्ते वा मस्तके तथा ।।
तदा वादेषु सर्वेषु जयमाप्नोति नित्यशः ।। ३६ ।।

अगहनीपूर्नोको मोरशिखाकी जड़ यत्नसे उखाड़ हाथमें वा मस्तकमें बांधे तो सबवादोंमें जय पावे ।।३६।।

मंत्रः। ॐ नमः कनकपिंगे रौद्रकृपातरुदास्त्रधरनी तिष्ठ सरासरसत्वान मोहये भगवतीसिधिधुजो इति मीठमहामाये स्वाहा ।।
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा तदा सिद्ध्यतिमंत्रराट् ।। ३७ ।।

यह मंत्र एक सौ आठ वार जपे तो मंत्र सिद्ध होय ।।३७।।

कार्त्तिकस्य चतुर्दश्यां कृष्णपक्षे समानयेत् ।।
नीलवृक्षस्य मूलं च स्मशानाच्च विशेषतः ।।
सूत्रेण बंधयेद्धस्ते तदा वादे जयो भवेत् ।। ३८ ।।

कातिककृष्णपक्षकी चतुर्दशीकोनीलकी जड़ स्मशानसे लाकर सूतमें कसके हाथमें बांधो तो सब वादोंमें जय पावे ।।३८।।

श्वेतगुंजकमूलं च मुखे निक्षिप्य यत्नतः ।।
तदाशत्रोर्मुखं चैवनिरुंध्यान्नात्र संशयः ।। ३९ ।।

सपेद गुंजाकी जड़ लेकर मुखमें रखे और मंत्र पढ़े तो शत्रुका मुख रुक जाय इसमें सन्देह नहीं है ।।३९।।

मंत्रः ॐ ह्रीं रक्तचामुंडे कुरु कुरु स्वाहा ।
हस्तर्क्षे छछूंदरं च चर्णं कृत्वा विधानतः ।।
अंगेषु मर्दयेच्चैव तदा भग्नाश्च हस्तिपाः ।। ४० ।।

मंत्र पढ़ हस्तनक्षत्रमें छछूंदर पकड़कर चूर्ण कर विधानसे अंगोंमें मर्दन करे तो हाथीवाले भाग जांय ।।४०।।

तिलपुष्पं चूर्णसमं कृत्वा तिलकमुत्तमम् ।।
हस्तिपाश्च पलायंते सिंहत्रस्ता वने यथा ।। ४१ ।।

तिलके फूल और छछूंदरका चूर्ण बराबर ले तिलक करे तो हाथीवाले भाग जांय ।।४१।।

हस्तर्क्षे च निगृह्णाति मूलं कीकवचस्य च ।।
हस्ते बध्नाति तां चापि शिरसि च विशेषतः ।।
तदा युद्धे भयं नैव न चापि शस्त्रघातनम् ।। ४२ ।।

हस्तनक्षत्रमें कोकवककी जड़ ले हाथमें वा शिरमें बांधे तौ युद्धमें डर न लगै और शस्त्र न लगै ।।४२।।

श्वेतकंटकिमूलं च हस्ते गृह्य व बंधयेत् ।।
संदर्शनात्पलायंते व्याघ्राः सर्वे दशो दिशः ।। ४३ ।।

सपेद कटइयाकी जड ले हस्तनक्षत्रमें हाथमें बांधे तौ व्याघ्र देखके दशों दिशाको भाग जाय ।।४३।।

मंत्रः । गौरीकांत महादेवकेन जाई अहो
बांधिजै हमारा कुत्ता हा आइ यह भूमि हमैं
छोडि दीजैं तुरिय बर घर कीजैं मेरे पास
आवौ तौ हनुमतकी आन ।।

इस व्याघ्र बांधनेवाले मंत्रको पढ़े ।

पुनर्वशीकरणम् ।

पुष्ये धत्तूरपुष्पं च मूले मूलं च गृह्यते ।।
गोरोचनं च कर्पूरं समभागं समानयेत् ।। ४४ ।।

पुष्य नक्षत्रमें धतूरेका पुष्प ले तथा मूल नक्षत्रमें जड़ ले और गोरोचन कपूर समभागले ।।४४।।

तिलकं कृत्य च भवेत्स्त्रीनामकथनेन च ।।
वशीभूता तदा याता महादेवप्रसादतः ।। ४५ ।।

तिलक कर जिस स्त्रीका नाम ले वह महादेवके प्रसादके वश्य होय ।।४५।।

रात्रौ स्ववीर्यमादाय हस्ते कृत्वा तु यत्नतः ।।
वामांगुलिनाच यस्यायः स्त्रियांगुष्ठे न्यवेशयेत् ।। ४६ ।।

रात्रिको अपना वीर्य हाथमें रखे और वाम अंगुलीसे स्त्रीके अंगुठेमें लगा दे तो सो वश्य होय ।।४६।।

इज्यर्क्षे च गृहीत्वैव कृष्णतूमरकीलकम् ।।
रविवारे स्पृशेद्यां वै सा वशीभूता न संशयः ।।
बंध्या स्त्री सप्तरात्रेण वश्यं याता न संशयः ।। ४७ ।।

पुष्यनक्षत्रमें कृष्ण धतूरेकी कील रविवारको जिसको छुवा दे सो वश्य होय । बंध्या स्त्री भी सात रात्रिमें वश होती है ।।४७।।

मंत्रः । ॐ चिमिचिमि स्वाहा ।।
उत्थाय प्रातरेव सुमुखं संमार्जयेच्च ।।
सप्त सप्त च चुलुकां मंत्रितां च पिबेदपः ।।
यस्या नाम ब्रुवेच्चैव वशीभूता न संशयः ।। ४८ ।।

यह मंत्रपढ़ प्रातःकाल उठ अपना मुख धोवे और सात चुल्लू पानी अभिमंत्रित करके जिसका नाम लेके पीवे वह वश्य होय ।।१८।।

ॐ नमः छिप्रकामिनी अमुकीं मे वशमानय स्वाहा ।।ॐ
नागकेशरकं चैव कमलपुष्पं तथैव च ।।
तगरं केशरं चैव जटामासीं वचं तथा ।। ४९ ।।

यह मंत्र पढ़कर नागकेशर कमलफल तगर केशर जटामासी वच ।।४९।।

समभागे चूर्णयित्वा धूपयेदंगमुत्तमम् ।।
मनसा वा स्मरेद्यां वै सापि वश्या न संशयः ।।५० ।।

बराबर ले चूर्ण कर अपने अंगमें धूप दे मनमें जिस स्त्रीका स्मरण करे सो वश होय इसमें संशय नहीं ।।५०।।

मंत्रः । अमुली महामुली छठछसर्वसंक्षेत्रजेनोपद्रवेभ्यः स्वाहा।
मंत्रेदं मासमेकं च यस्या नाम समन्वितम् ।।
सापि वश्या भवेच्चैव सिद्धियोगो निगद्यते ।। ५१ ।।

इस मंत्रका महीने भर जिसका नाम लेकर जप करे सो वश्य होय । यह सिद्धियोग है ।।५१।।

गर्दभस्य शिरस्थीनि स्थापयेन्नरमस्तके ।
घमराप्रभवार्केण रंगयेद्वर्तिकैककाम् ।। ५२ ।।

गदहेके शिरके हाड़ मनुष्यके कपालमें धर घमराके अर्कमें एक एक बत्ती रंगे ।।५२।।

स्नेहयुक्तां कपाले च प्रज्वाल्य कृतकज्जलम् ।।
शनौ नेत्रे प्रदातव्यं दर्शनाद्याति वश्यताम् ।। ५३ ।।

और तेल धरकपालमेंदीपबारकज्जलकर शनैश्चरको नेत्रोंमें लगाके जिसकी ओर देखे सो वश्य होय ।।५३।।

श्वेतगोदरिलेपेन लिंगे चैव विधानतः ।।
ध्रुवेण वश्यतां याति स्त्री च मानवत्यपि सा ।। ५४ ।।

सफेद गोदरिका लेप लिंगमें करे तो निश्चयपूर्वक मानवतीभी वश होय ।।५४।।

कर्पूरं कृष्णधत्तूरं मूलं पत्रं तथैव च ।।
लिंगलेपनमात्रेण द्रवं याति तदाबला ।। ५५ ।।

कपूर कृष्ण धतूरेके पत्र और जड़का लिंगमें लेपन करे तो स्त्री द्रवे ।।५५।।

कर्पूरं मंदारपुष्पं समभागं च चूर्णयेत् ।।
लिंगलेपनमात्रेण वशीभूता तदाबला ।। ५६ ।।

कपूर मदारके फूलका बराबर चूर्णकर लिंगमें लेपन कियेसे स्त्री वश होय ।।५६।।

[स्त्रीद्रावणम् ।

गौदरिं वारिणा पिष्ट्वा हस्तस्योपरि लेपयेत् ।।
पुरुषस्पर्शमात्रेण स्त्री द्रवति विशेषतः ।। ५७ ।।

गौदरिको पानीमें पीस हाथके ऊपर लेपन करे तो पुरुषके छूनेसे स्त्री द्रवे ।।५७।।

मंत्रः । ॐ नमो भगवती उगदामरेशुराह-
द्रवैं द्रवैं स्त्रीणां पातय स्वाहा ठः ठः ।।
यह मंत्र पढे ।।

यह मंत्र पढ़े ।।

। पतिवशीकरणम् ।

कौंडिल्यपक्षिविट् चैव मांसं घृतमलं तथा ।।
योनिल्लेपनमात्रेण पुरुषो याति वश्यताम् ।। ५८ ।।

यह मंत्र पढ़े और कौडिल्लाकी विष्ठा मांसघृतके मैलका योनिमें लेपन करै तो पुरुष वश होय ।।५७।।

मंत्रः । ॐ काममालिनी ठः ठः स्वाहा ।
सप्तवारं पठेन्मंत्रं गोरोचनसमन्वितम् ।।
मत्स्यपित्तेन संयुक्तं तिलकं च करोति या ।।
वामांगुलिना तर्जयेत्पुरुषो याति वश्यताम् ।।५९ ।।

यह मंत्र सात वार पढ़ गोरोचनमत्स्यपित्तमें मिलाकर स्त्री तिलक करे तो पुरुष वश्य होय और बाई अंगुरी पुरुषके ओर करे तो भी पुरुष वश्य होय ।।५९।।

रजस्वला स्वरुधिरं गोरोचनसमन्वितम् ॥
तिलकं कृत्वा दर्शनात्पुरुषो याति वश्यताम् ॥ ६० ॥

रजस्वलास्त्री अपने रुधिरमें गोरोचन मिलाकर तिलक कर जिसकी ओर चितवे सो पुरुष वश होय ॥६०॥

मंत्रः॥ । चामुंडे तरुतरु अमुकाय कर्षय आकर्षय स्वाहा
मंत्रेदं दिनसप्त च त्रिगुणं प्रत्यहं तथा ॥ ६१ ॥
जपेत्सहस्रं पुरुषो स्त्रीनामग्रहणात्तथा ॥
मनसा च समाधाय ध्रुवेण याति वै गृहे ॥ ६२ ॥

यह मंत्र आकर्षणका इकईस रोज हजार हजार जपे और दिनदिन पुरुष स्त्रीका नाम लेकर मनमें ध्यान करे तो निश्चय स्त्री वश होय ॥६१॥६२॥

रक्तवस्त्रे लिखेद्यंत्रं रक्तचंदनलाक्षया ॥
उत्तराभिमुखो भूत्वा पूजयेत्सुसमाहितः ॥ ६३ ॥

रक्तचंदन वा लाखसे उत्तरमुख होकर रक्तवस्त्रमें यंत्र लिखे और पूजे ॥६३॥

निखनेत्तं पृथिव्यां वै दिनानि चैकविंशतिम् ॥
तस्योपरि च सिञ्चयेत्तंडुलोदकवारिणा ॥
तदायाति मानिनी च वैरिणी चापि दूरतः ॥ ६४ ॥

और पृथिवीमें गाड़ इकईस दिनतक चावलके धोवनके जलसे सींचे तो मानवती वैरिणीभी दूरसे आ जाय ॥६४॥

कौहा (अर्जुन) वृक्षका बांदा आश्लेषा नक्षत्रमें ले छेरीके मूत्रमें पीस-कर क्षेपण करे तो पुरुषके स्त्री और स्त्रीके पुरुष वश होय ॥६५।६६॥

कृष्णसर्पस्य च फणां छित्वा चर्णं समानयेत् ॥
तं चापि धूपयेदंगे नाम गृह्णाति चेति तम् ॥ ६७ ॥

कृष्णसर्पकी फणा काटकर चूर्ण कर अंगमें धूप दे जिस स्त्रीका नाम ले सो उस पुरुषके समीप आवे ॥६७॥

संध्यायां तु समादाय यस्याः पादतलाद्रजः ॥
वामानाम समुच्चार्य लक्षमंत्रचतुष्टयम् ॥ ६८ ॥

संध्यामें स्त्रीके पादकी धूलि उठाकर वामानाम ले चार लाख मंत्र जपे ॥६८॥

मंत्रः । ह्रीं ह्रूं अमुकी आकर्षय ।
जपे मंत्रे समायाति गृहं प्रति न संशयः ॥
घुंघुरनाममंत्रं च जपित्वा पुष्पमाहरेत् ॥ ६९ ॥
चेटगस्य फलं चैव पूजयेच्च तदा निशि ॥ ७० ॥

यह मंत्र पूर्ण भये पर वह स्त्री गृहको चली आवे इसमें संदेह नहीं और घुंघुरनाम मंत्र जप कर चेटग वृक्षके फूल फल तोडे और रात्रिमें पूजन करे ॥६९॥७०॥

मंत्रः । अरं घुघुराकुष्टकर्मकर्त्ता अमुकं करोवश्यं ।
भ्रामरौ स्थितौ चैकत्र वियोजयेद्विधानतः ॥
पृथक्पृथक्समानीय चिताकाष्ठेन निर्दहेत् ॥ ७१ ॥

यह मंत्र पढ़ भ्रमर भ्रमरी जब इकट्ठे होंय तो उनको न्यारे कर चिताकी लकड़ीमें जलावे ॥७१॥

भस्म समानीय तदा समीपे प्रेरणात्तथा ।।
प्रक्षेपयेन्मंत्रयुतं वश्यं याति विशेषतः ।। ७२ ।।

भस्म ले मंत्र पढ़ नाम ले और मंत्रसमेत भस्म शिरपर छोड़ दे तो विशेषतासे वश्य होय ।।७२।।

स्तंभनम् ।

हरिद्रा हरतालं च जलेन समन्वितम् ।
भूर्जपत्रे लिखेद्यंत्रं हरित्सूत्रेणवेष्टयेत् ।।
बंधयेत्स्त्रीमूर्ध्नि तं वै न वदेत्सह केन सा ।। ७३ ।।

हरदी हलतालको जलमें पीसकर भोजपत्रपर यंत्र लिखे और हरे सूत्रसे लपेटे और स्त्रीके मूंड़में बांधे तो वह किसीकि संग न बोले ।।७३।।

उष्ट्रस्यास्थि समादाय खनित्वा भू निधापयेत् ।।
अतिशीघ्रचला चापि स्थिरीभूता न संशयः ।। ७४ ?।।

ऊंटके हाड़ले खोदके भूमिमें जिसका नाम लेकर गाड़े वह अतिशीघ्र चलनेवाली भी स्थिर होय ।।७४।।

घामरं ह्यंधझारं च सहदेवीं च सर्षपम् ।। ७५ ।।
समभागं च तां कृत्वा तैलं निःसारयेत्तदा ।।
पातालयंत्रं तिलकं शत्रुबुद्धि च नाशयेत् ।। ७६ ।।

घामरा, अन्धझार, सहदेई, सरसों बराबर लेकर पातालयंत्रसे तेल काढ़ तिलक करे तो शत्रुकी बुद्धि नष्ट होय ।।७५।।७६।।

मंत्रः । ॐ नमो भगवते विश्वामित्राय नमःसर्वमुखीभ्यां विश्वामित्राज्ञामति आगच्छस्वाहा ।

मंत्रेणानेन तर्पयेदष्टोत्तरशतं च तम् ।।
नामोच्चारणमात्रेण बुद्धिनाशो भवेद्रिपोः ।। ७७ ।।

इस मंत्रसे शत्रुका नाम लेकर एक सौ आठ बार तर्पण करे तो रिपुकी बुद्धि नष्ट होय ।।७७।।

मंत्रः । ॐ नमो ब्रह्मवासिनी रछ रछ ठः ठः स्वाहा ।
मंत्रेदं च पठित्वा तु सप्त केशान्समाहरेत् ।।
करे बध्नाति त्रयं च द्वौ द्वौ हस्ते समानयेत् ।।
चौरकार्ये तदा यातः न वदंति च केचन ।। ७८ ।।

मंत्र पढ़कर सात बाल उखाड़े तीन हाथमें बांधे, दो दो बाल हाथमें रखे और चोरीको जाय तो कोई न बोले ।।७८।।

अंकोललक्ष्मणामूलं शरपुंखकमेवच ।। ७९ ।।
मयूरपिच्छस्य मूलं छिर्हटामूलमेवच ।।
बृहद्द्रुघ्नमूलं च पुष्यार्के तु समानयेत् ।। ८० ।।

अंकोलकी जड़, लक्ष्मणाकी जड़, सरफोकाकी जड़, मयूरशिखाकी जड़, छिर्हटाकी जड़ और कसौंदीकी जड़ पुष्यार्कमें लेकर ।।७९।।८०।।

गृहे स्थितेऽपि न भयं राजतश्चोरतोऽपि च ।।
गृहीत्वा केतकीमूलं शिरसि धारयेच्च यः ।। ८१ ।।

गृहमें रखे तो चोरादिकोंका भय नहीं होय तथा केतकीकी जड़ शिरमें रखे तो भी भय नहीं होय ।।८१।।

तालवृक्षस्य मूलं च मूर्ध्नि धारणमात्रतः ।।
पादे खर्जूरमूलं च खड्गो न छिद्यते तदा ।। ८२ ।।

ताल वृक्षकी जड़ मूंड़में और खजूरकी जड़ बाम पादमें होय तौ खड्गसे न कटे ॥८२॥

मूलत्रयं समादाय गोघृतेन समन्वितम् ॥
पिबेद्योपि नरो तं वै नास्त्राणि विव्यधेच्च तम् ॥ ८३ ॥

तीनों जड़ें लेकर गोघृतमें मिलाकर पीवे तो अस्त्र न वेधे ॥८३॥

मंत्रः । अहो कुंभकरणमहाराक्षसवेषसांगीव संभूतपरसैन्यभंजनं महाभगवानरुद्रोग्यायांतो स्वाहा । मंत्रमेतं जपेद्वारमष्टोत्तरशतं तथा ॥ तदा सिद्धिर्हि जायेत महादेवप्रसादतः ॥ ८४ ॥

यह मंत्र अष्टोत्तर वार जपे तौ महादेवके प्रसादसे सिद्धि होय ॥८४॥

पुष्यार्के तु समादाय शिरीषस्य च मूलकम् ॥
जलेन तिलकं कृत्वा तप्तलौहे न दह्यते ॥ ८५ ॥

पुष्यार्कमें शिरसकी जड़ ले जलमें पीस तिलक करे तो ताते लोहेमें न जले ॥८५॥

सर्पो यदा दशति च तिलकं कारयेत्तदा ॥
निर्विषश्च भवेच्छीघ्रं नात्र कार्याविचारणा ॥ ८६ ॥

जो सांप काटे तो तिलक करे तो विष न चड़े इसमें विचार नहीं करना ॥८६॥

श्वेतगुंजाश्वगंधयोश्च मूलं चोत्तरभाद्रके ॥
चोत्तराभिमुखो भूत्वा न दहेन्मूर्ध्नि धारणे ॥ ८७॥

श्वेत गुंजाकी जड़ और असगंधकी जड़ उत्तराभाद्रपदा नक्षत्रमें उत्तर मुख कर मूंड़पर धरे तो अग्निमें न जरे ॥८७॥

पतजियाफलैकं च खादयेद्विषभोजिनम् ॥
विषं न स्पृशते तस्य देहे चैव सुखी भवेत् ॥ ८८ ॥

पतजियाका फल विषवालेको खवावे तो उसकी देहमें विष न व्यापै, सुखी होय ॥८८॥

विजयामूलमादाय गोरोचनघृतं तथा ॥
हस्तलेपेन तिलकं कृत्वा न दह्यते तदा ॥ ८९ ॥

भांगकी जड़ गोरोचन और घृतका हाथमें लेप कर तिलक करे तो न जरे ॥८९॥

मरिचं पिप्पली शुंठी चर्वयित्वा ग्रसेत् तान् ॥
अर्कतंडुलग्रासेन दिनाई च न स्पृशेत्तम् ॥ ९० ॥

मिर्च पीपल सोंठ इनको चबावे और अर्कके तंडुल चबावे तो दिनाइ न लगे ॥९०॥

शुंठी वचं घृतं चैव शर्करा च समन्वितम् ॥
जलेन च पिबेद्योपि तप्ततैले न दह्यते ॥ ९१ ॥

सोंठ वच घृत शक्करको जलके संग पीवे तो ताते तेलमें न जरे ॥९१॥

मंत्रः । ॐ अग्निदहंतीको धरै समह बहै कलाइ तापिनी ताप चोरी इष्टि द्रव्यपते अस्तंभइ स्वरतुम सखीये ते अस्तंभ श्रीमहादेवकी आग्या ॥ मंत्रेदं तु पठेद्योपि तप्ततैले न दह्यते ॥ मंत्रः ॐ लोहाजलनप्रजलैकोभाव हो चरुवाके दारका लाहा

परंतसारु ।। अग्निस्तंभनम् । ॐ न्हीं महिषवाहिनी जेभय मोहय छेदय अग्निस्तंभय अग्नि अग्निस्तंभय ठः ठः श्रीमहादेवकी आग्या हनुमानकी आग्या नारायण सूर्यकी आग्या ।। मंत्रेदं दशसहस्रं जप्त्वा सिद्धिमवाप्नुयात् ।। ९२ ।।

अग्नि रोकनेका मंत्र पढ़े तो तेलमें न जरे, दूसरा मंत्र दश हजार जपे तो सिद्धि होय ।।९२।।

मंत्रः । ॐ तता तता अंगरी हेमपथकोकिवारी महिंद्रसीशलं गोर महादेवकी आग्या । ॐ नमो कंवल कोषिलनिद्रुपति काढि जलेसले पूर्वते कतारनु महादेवकी पूजा खाय पाय टेलै । ॐ अग्नि ववरतिको धरे मैं धरी गलहंथ्य वाम माया योनकोजो सो कीन्हो हंथ्य जलय प्रजलपदमयंयेय आवंजः महादेवकी पूजा पावे पायडालै जः । ॐ अग्नि जलतीमें धरि जहा हर दीन्हो हथ्यं वैमैस्वाद रथ भियौदे नारायण साखीश्रीसूर्यकी आग्या अग्निकुंड ब्रह्मांड जला ऊपर आनौ पानीरेला आनि वैस्वादर नाचौ मेरी आदिनाथके जभमरो जी महंमद। ॐ हंगुरुगतीसैं लि-

खतिकाकमहृय्यंईद्रगस्त्रिहृवोरोति । अग्नि-
मुक्तमंत्रेदं हि चाष्टोत्तरशतं जपेत् ।। तदा
सिद्धो भवेच्चैव महादेवप्रसादतः ।। ९३ ।।

यह अग्निमुक्त मंत्र एक सौ आठ बार जपे तो महादेवके प्रसादसे मंत्र सिद्ध होय ।।९३।।

गोरसं रनिना सार्द्धं पिष्ट्वा लेपं च कारयेत् ।।
मनुष्यास्थौ तथा तं च वह्नौ तैले न निर्दहेत् ।। ९४ ।।

गोरस और रनि पीसकर मनुष्यके हाड़में लेप करे तो तेलमें वा अग्निमें न जरे ।।९४।।

मंत्रं जपेच्छनौ वारे बलिदानंसकुक्कुटम् ।।
आदित्यवारे दद्याच्च मद्ये तन्मांसमुत्क्षिपेत् ।। ९५ ।।

शनिवारको मंत्र जपे और कुक्कुटका बलिदान दे रविवारको उसका मांस मदिरामें छोड़े ।।९५।।

तन्मांसं खरलं कृत्वा वारिणा तिलकं चरेत् ।।
अग्निमध्ये तदा गच्छेदग्निर्नैव दहेच्च तम् ।। ९६ ।।

वह मांस जलमें खरल कर तिलक करे और अग्निमें जाय तो न जले ।।९६।।

इयं वावसर्वजलेषु सिद्धमस्ति न संशयः ।।
तुंबिलस्सोरयोर्बीजं पुष्पं वारिणि पिष्टयेत् ।। ९७ ।।

यह वाणी सब जलमें सिद्ध है। तोंबीके बीज और लहसोरेकी बीज और फल जलमें पीस ।।९७।।

जले निक्षिप्य तं चैव रात्रौ स्तंभो भविष्यति ।।
लवणक्षेपणाच्चैव पुनर्वहति वै जलम् ।। ९८ ।।

रात्रीको जलमें छोड़े तो जल रुके और लोन छोड़े तो फिर वहे ।।९८।।

मंत्रः । ॐनमो भगवते रुद्राय ठः ठः ठः ठः ठः ठः ।
मगरशिवानीगहा एषां गृह्णाति वै शवम् ।।
सर्पस्य च फणं तैले पाचयेन्मध्यमाग्निना ।। ९९ ।।

यह मंत्र पढ़ मगर शिव और नौगहा इन जीवोंकी लाश लेकर और सांपकी फणा ले तेलमें मध्यम अग्निसे पकावे ।।९९।।

स्वशिरसि नासिकायां कर्णयोरपि लेपयेत् ।।
तदा गच्छति जले वै यथा गच्छति सर्पराट् ।। १०० ।।

और अपने शिरमें नाशिकामें कानमें लगावे तो सांपके सरीखा जलमें चला जाय ।।१००।।

दिक्सहस्रं जपेन्मंत्रमुपोष्य च चतुर्दिनम् ।।
शिवपूजां ततो कृत्वा सिद्धं यातं च मंत्रकम् ।। १०१ ।।

मंत्रका दश हजार जप करे, चार दिन व्रत करे और शिवकी पूजा करे तो मंत्र सिद्ध होय ।।१०१।।

प्रथमं च वशीकर्णं ततः स्तंभनकारकम् ।।
मंत्रा उक्ताश्चौषधीश्च सर्वसिद्धिकरीस्तथा ।। १०२ ।।
इति श्रीअवस्थीप्रयागदत्तसुतरामचरणविरचिते
रुद्रयामलशाबरतंत्रे प्रथमः पटलः ।। १ ।।

इस पटलमें प्रथम वशीकरण फिर स्तंभन फिर मंत्र और फिर औषधी कही है ।।१०२।।

इति भाषाटीकायां प्रथमः पटलः ।।१।।

भाषाग्रंथं च दृष्ट्वा हि संस्कृतं कृतवानहम् ।।
नंदरामस्य प्रेरणा चास्माकं प्रचोदयति ।। १ ।।

भाषाग्रंथ हमने देखा सोही संस्कृत किया, नंदरामका कहना हमको प्रेरित कर रहा है ।।१।।

अथातः संप्रवक्ष्यामि मोहनं च विशेषतः ।।
धत्तूरस्य च पंचांगं चूर्णयेत्सुसमाहितः ।। २ ।।
महिषीसर्परुधिरे चार्न्द्य तं चापि यत्नतः ।।
संध्यायां धूपयेद्देहमवलोकाच्च मोहति ।।
कृष्णवृश्चिकचूर्णं च धूपयेन्मोहनं भवेत् ।। ३ ।।

अब इसके उपरांत मोहन कहते हैं। धतूरेका पंचांग चूर्ण कर महिषीका रुधिर और सर्पका रुधिर उसमें मिलाकर संध्यामें अपने अंगमें धूप दे तो जो देखे सो मोहित होय ।।२।।३।।

इंदोरनि चितावरि समानीय मनःसिलम् ।।
एषां धूपेन च भवेन्मोहनं नात्र संशयः ।। ४ ।।

इंदोरनि चितावरि और मनःशिल इनका अंगमें धूप दे तो देखेसे मोहन होय इसमें संदेह नहीं है ।।४।।

धत्तूरस्य च बीजानि हरतालं च गृह्य वै ।। ५ ।।
खादयेच्चैव यं शत्रुं वातरोगी तदा भवेत् ।।
दुग्धशर्करपानेन वातरोगाद्विमुच्यते ।। ६ ।।

धतूरेके बीज और हरताल जिस शत्रुको खवावे वह वातरोगी होय और दुग्ध शक्कर पिलावे तो वात रोगसे छूटे ।।५।।६।।

छछूंदरं कृष्णसर्पशिरं वृश्चिकटंककम् ॥
सायं प्रधूपयेदंगं मोहनं च भवेत्तदा ॥ ७ ॥

छछूंदर कृष्णसर्पकी फणा और बिच्छूका टाकु ले संध्यामें अंगको धूपित करे तो मोहन होय ॥७॥

उच्चाटनम् ।

मंत्रः । ॐ विस्वाय नाम गंधर्वलोचनी
नामी लीसतिकरनै तस्मै विश्वाय स्वाहा ।
मंत्रेदं च जपेच्चैव जले स्थित्वा सहस्रकम् ॥
दशांशं हवनं कार्यं मारणोच्चाटनं भवेत् ॥ ८ ॥

यह मंत्र उच्चाटनका है, इस मंत्रका प्रथम जलमें खड़े होकर १ हजार जप करे और दशांश हवन करे तो मारण और उच्चाटन होय ॥८॥

चितावरस्य काष्ठं च चतुरंगुलमानकम् ॥
पुनर्वसौ च नक्षत्रे गृह्णीयात्सुसमाहितः ॥ ९ ॥
सप्तवारं च मंत्रेण मंत्रयित्वा विधानतः ॥
भूमौ निखनेच्चैव पलायेत्तु न संशयः ॥ १० ॥

चितावरका चार अंगुल काठ पुनर्वसु नक्षत्रमें ले सात वार मंत्र पढ़कर विधानसे भूमिमें गाडे तो शत्रु भागे ॥९॥१०॥

मंत्रः । ॐ लोहितामुख स्वाहा ।
स्वात्यृक्षे च गृहीत्वा च वेदांगुलप्रमाणकम् ॥
उमरीवृक्षस्य काष्ठं यस्य गृहे च खानयेत् ॥
सोपि सद्यो पलायेच्च नात्र कार्या विचारणा ॥ ११ ॥

यह मंत्र पढ़कर स्वाति नक्षत्रमें उमरीकी लकड़ी ४ अंगुल ले जिसके भमिमें गाड़े वह शत्रु शीघ्र भाग जाय इसमें विचार नहीं ।।११।।

मंत्रः । गिली स्वाहा ।

भरण्यां च गृहीत्वैव अरुवापाखमुत्तमम् ।।

सप्तवारं च मंत्रेण निचखान गृहे यदा ।।

तदा पलायेद्रिपुश्चनात्र कार्या विचारणा ।। १२ ।।

भरणी नक्षत्रमें अरुवाकीपाख कौशैनाकी छिपोंका पाख आधा फार ले सातवार मंत्र पढ़कर जिसके गृहमें गाड़ देय वह रिपु भाग जाय इसमें विचार नहीं ।।१२।।

मंत्र । ॐ दहदहवन स्वाहा ।

अश्वन्यृक्षे गृहीत्वैव वाज्यस्थिचतुरंगुलम् ।।

सप्तवारं च मंत्रेण निखनेच्च रिपोगृहे ।।

सोपि यातो गृहाच्छीघ्रं पलायनपरो भवेत् ।। १३ ।।

अश्विनी नक्षत्रमें वाजीका हाड़ ४ अंगुल ले सात बार मंत्र पढ़कर शत्रुके घरमें गाड़ दे तो शत्रु भाग जाय ।।१३।।

मंत्रः ॐ घुंघूतिठःठः स्वाहा ।

अरुवावृक्षस्य पाषमष्टोत्तरशतं हुनेत् ।।

यस्य नाम गृहीत्वैव सोपि भग्नो भवेद्ध्रुवम् ।। १४ ।।

शैनका एक पाश ले एक सो आठ बार मंत्र पढ़ जिसका नाम लेकर हवन करे सो भाग जाय ।।१४।।

मंत्रः । ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरा
लायकपिरूपाय अमुकपुत्रबांधवैः सह हन
हन दह दह चय चय शीघ्रमुच्चाटय फुंफट्
स्वाहा ठः ठः। मानुषास्थिसमादाय चतु
रंगुलकं शुभम् ॥ यस्यांगणे निचखने-
त्सोपि भाग्नो भवेद्गृहात् ॥ १५ ॥

यह मंत्र पढ़कर मनुष्यका हाड़ ४ अंगुल ले जिसके आंगनमें गाड़ देय तो गृहसे भाग जाय ॥१५॥

भरण्यृक्षे समादाय स्मशानकाष्ठं त्र्यंगुलम् ॥
षट्सप्ततिवाराश्च जपित्वा मंत्रमेव च ॥
यस्य गृहे निचखनेत्तस्य नाशो भवेद्ध्रुवम् ॥ १६ ॥

भरणी नक्षत्रमें मसानकी लकड़ी तीन अंगुल ले छिहत्तर ७६ बार मंत्र जप जिसके गृहमें गाडे उसका नाश होय ॥१६॥

मंत्र । ॐ निरिनिहिउठः ।
ॐ नमो भगवतेरुद्राय अमुकगृहनगृहनपचपचत्रासय
त्रोटयनाशयसुरतिराग्यायति ठः ठः ।
अंगुलैकं मानुषस्य चास्थिकीलं समानयेत् ॥
काकपित्तेन संश्लिष्टं द्वारि खानात्पलायते ॥ १७ ॥

यह मंत्र पढ़ एक अंगुल मनुष्यके हाड़की कील काकके पित्तमें भिजोके जिसके द्वारमें गाड़े सो भाग जाय ॥१७॥

मंत्रः ॐ ह्रीं दंडीनंहीनमहादंडिनमस्ते ठः ठः।
सप्तांगुलं मानुषास्थिकीलं निच खनेद्गृहे ॥
मंत्रेण च यस्य रिपोर्गृहं त्यक्त्वा पलायते ॥ १८ ॥

मंत्र पढ़कर सात अंगुल मनुष्यके हाड़की कील गृहमें गाडे तो शत्रु भाग जाय ॥१८॥

अर्द्धझारस्य कीलं च चतुरंगुलकं तथा ॥
मघायां च जपेन्मंत्रं वशीभूतो न संशयः ॥ १९ ॥

आधेझारेकी चार अंगुलकी लकड़ी मघा नक्षत्रमें ले मंत्र जपकर उसकी कील गाड़े तो वश्य होय ॥१९॥

पुष्यर्क्षे मानुषास्थिचतुरंगुलकीलकम् ॥
नामोच्चारणमात्रेण गृहे च निखानयेत् ॥
सोपिमृत्युमवाप्नोतिब्रह्मणारक्षितो यदि ॥ २० ॥

पुष्पनक्षत्रमें मनुष्यके हाड़की कील ४ अंगुल लेकर मंत्र पढ़ नाम ले गाड़ दे सो ब्रह्मातक रक्षा करे तोभी मर जाय ॥२०॥

मंत्रः । ॐ शुरशुरे स्वाहा ।
सर्पास्थिचांगुलं चैकमाश्लेषार्क्षे समानयेत् ॥
निखनेत्सप्तमंत्रेण तदा च मरणं भवेत् ॥ २१ ॥

मंत्र पढ़कर सर्पके हाड़की एक कील ले आश्लेपा नक्षत्रमें ले सात बार मंत्र पढ़ गाड़े तो मरण होय ॥२१॥

मंत्रः । ॐ शुखले स्वाहा ।
छवूंदियाकीटमेकं वृश्चिकटंकमेव च ॥
तजं केवाक्षबीजं च चैकत्र सह मर्दयेत् ॥ २२ ॥

यह मंत्र पढ़कर छवूदियाकीट, वीछूका टाक, तज और केवाचके बीज ले सब बराबर मर्दन कर ।।२२।।

यस्य वस्त्रे क्षिपेच्चैव बहुगुल्मप्रजायते ।।
मरणं सप्तदिवसे भवेत्तस्य न संशयः ।। २३ ।।

जिसके कपड़ेपर छोड़ दे सो गुल्मरोगी हो सात दिनमें मर जाय ।।२३।।

चिताकाष्ठस्य धनुषं कच्छपस्य शरंतथा ।।
मृण्मयीं पुत्तलीं कृत्वा शत्रो रूपमयीं तथा ।।
शरेण वेधयेत्तां च मृत्युर्भवति नान्यथा ।। २४ ।।

चिताकी लकड़ीकी धनु बनावे, कछुवाका तीर बनावे, माटीकी शत्रु-कीसी पुतरी बनावे और उसको तीरसे मारे तो शत्रु मरे यह अन्यथा नहीं है ।।२४।।

रक्तवर्णं शरैकं च स्वजंघास्थिधनुस्तथा ।। २५ ।।
मयूरशिरस्य केशान्हस्ते कृत्वा विशेषतः ।।
दक्षिणाभिमुखं कृत्वा धनुषं च समरोपयत् ।। २६ ।।

लाल रंगका एक शर बनावे और कुत्तेकी जंधाका धनुप बनावे, मोरके शिरके बाल हाथमें ले दक्षिणमुख होकर धनुप चढ़ावे ।।२५।।२६।।

सिंदूरसप्तमंडरान्कृत्वा सप्त नाम लिखेत् ।।
स्वशत्रोश्च धनुष्बाणं बाणेन व्यधमेच्चतम् ।। २७ ।।

सिंदूरके सात लीके बनाके उसमें अपने शत्रुका नाम लिखे और शत्रुका धनुप बाण बनाके उसके अपने बाणसे मारे ।।२७।।

मंत्रः । ॐ हाथ खड्गमूशल लैं कमला
गरुड़ पाय परति आवै ताहि मारि हो नर-

सिंह वीर वायु नरसिंहवीर प्रचंडकी शक्ति
लैं लैं लै लै त्रिशूला उत्त मूला गजि झाइ
छडाउ ताहि छाडि । मंत्रः । ॐ नमो नर-
सिंहाय कपिलजटाय अमोघवीचासत्तवृ-
त्ताय महाडोग्रचंडरूपाय ॐ न्हीं न्हीं छां
छां छीं छीं फट् स्वाहा ।। जपेद्दशसहस्रं तु
हवनं तद्दशांशतः ।। रक्तपुष्पैः कोविदारैरा-
ज्येन च समन्वितः ।। २८ ।।

इन मंत्रोंका दश हजार जप और दशांश लाल कदपल और घृत फूल मिलाकर होम करे ।।२८।।

काकपक्षं तथा पादं कुशं चांजलिनाग्रहीत् ।।
चैकविंशत्यंजलिं च दद्यान्नद्यां निरंतरम् ।। २९ ।।

कौवेका पंख तथा पंजा और कुश हाथमें लेकर इकईस अंगली नदीमें निरंतर तर्पण करे ।।२९।।

नित्यं गत्वा जपेन्मंत्रमष्टोत्तरशतं तथा ।।
अर्कपुष्पान्करे कृत्वा भ्रमचित्तो भविष्यति ।। ३० ।।
मंत्रः । ॐ नमोटकिप्रमोटगोरीअमुकस्यामु-
कस्य अख्व कुरु कुरु स्वाहा ।।

एक सौ आठ बार मंत्र जपे, अकउडके फूल हाथमें लेकर मंत्र जपे तो शत्रु भ्रमचित्त हो जाय ।।३०।।

व्याधिकरणम् ।

भल्लातकं च गुंजा च अरनिं समभागकान ॥
यस्योपरि क्षिपेच्चैव सोपि कुष्ठीभवेत्तदा ॥
शर्करादुग्धपानेन मुक्तरोगोऽभिजायते ॥ ३१ ॥

भिलावा गुंजा अरनी ये बराबर ले जिसके ऊपर छोड़े सो कुष्ठी होय और शर्करा दुग्ध पीवे तो रोगसे छूटे ॥३१॥

केवाचबीजं कृष्णं च शतावरीं समानयेत् ॥ ३२ ॥
गुंजां समानभागां च चैकत्र सहमर्द्दयेत् ॥
यस्यांगे च क्षिपेच्चैव पामारोगो भवेत्तदा ॥ ३३ ॥

कृष्ण केवाछबीज और शतावरि और इनके बराबर गुंजा ले एकत्र करके मर्दन कर जिसके अंगमें लगा दे उसके अंगमें खुजली पडे ॥३२॥३३॥

माषे चन्दनपूगौ च रक्तचंदनवारिणा ॥
तस्य लेपनमात्रेण पामारोगो विनश्यति ॥ ३४ ॥

उर्द चंदन और सुपारी रक्तचंदनके जलमें मिलाकर लगा दे तो नीका होय ॥ ३४ ॥

मंत्रः । ॐ नमो भगवते रुद्राय उंडासारेसु-
राय अमुकरोगे न ग्रह न ग्रह नपत्रप च
ताडय ताडय किलेदंह् फट ठः ठः ॥
शतावरीसमुत्खारं कोविदारस्य मूलकम् ॥
एकत्र कृत्वा मर्दयेद्भोजनाद्याति दास्यताम् ॥ ३५ ॥

शतावरि, समुद्रखार और कदपलको एकत्र मर्दन कर खिलावे तो दास होय ॥३५॥

अरुवा मस्तके धृत्वा लवणं सप्ताहानि च ।।
ताम्रपात्रे न्यसेच्चैव बिभीतक्वाथमुत्तमम् ।।
तेनैव चांजयेन्नेत्रं दृष्टिर्न स्फुरते तदा ।। ३६ ।।

अरुवा माथेपर धरे और लवण सात दिन मस्तक पर धरे और बहेरेका क्वाफ तामेके पात्रमें धरे और तिससे नेत्रमें अंजन करे तो दृष्टि प्रकाशित न होय ।।३६।।

निर्लज्जकरणम् ।

हरतालं च धत्तूरं बीजं काष्ठघुणं तथा ।।
भोजनं कारयेद्यं वै स निर्लज्जो भविष्यति ।।
शर्करादुग्धपानेन पूर्ववत्स भविष्यति ।। ३७ ।।

हरताल और धतूरेके बीज और काठका घुन जिसको खिलावे सो निर्लज्ज होय और शक्कर दूध पिलावे तो फिर पहिलेकी तरह होय ।।३७।।

हरतालं लशुनं च कनकस्य च बीजकम् ।।
चूर्णयित्वा च तान्सर्वान्यस्य शिरसि निक्षिपेत् ।। ३८ ।।
सोपि चकितो भवेच्च नात्रकार्या विचारणा ।।
दुग्धशर्करपानेन पुनर्मुक्तो भविष्यति ।। ३९ ।।

हरताल लशुन और धतूरेके बीज चूर्ण कर जिसके शिरपर छोड़े सो चकित होय इसमें संदेह नहीं और दूध शक्कर पीनेसे फिर अच्छा होय ।।३८।। ३९।।

कृष्णतिलं घृतं चैव मत्स्यपित्तं तथैव च ।। ४० ।।
खादयेद्यं सुधीश्चैव निर्लज्जो भवति क्षणात् ।।
सैंधवं लवणाज्यं च ह्यजादुग्धेन वै पिबेत् ।। ४१ ।।

कृष्ण तिल घृत मछरीका पित्त जिसको खिलावे सो सुंदर बुद्धिवाला भी होय और सेंधा लोन घृत छेरीके दूधमें मिलाकर पिलावे तो शुद्ध होय ॥४०॥४१॥

मयूरपरेवयोर्विट्कुक्कुटस्य तथैव च ॥
यस्य मूर्ध्नि क्षिपेच्चैव स पिशाचो भविष्यति ॥
मुंडनाच्चैव शुद्धोऽभून्नात्र कार्या विचारणा ॥ ४२ ॥

मयूर और परेवाकी विष्ठा और मुरगेकी विष्ठा जिसके मूंड़पर छोड़े सो पिशाच होय और मुंड मुंडायेसे अच्छा होय ॥४२॥

गुडकांज्यस्य बीजं च काष्ठकीटं तथैव च ॥ ४३ ॥
समभागं वटीं कृत्वा भोजनं कारयेन्नरः ॥
निर्लज्जो भवेच्चैव ह्यंजनेन सलज्जताम् ॥ ४४ ॥

गुडकांजके बीज और काठका घुन इनकी बराबर वटी करे और खिलावे तो निर्लज्ज होय और अंजन लगायेसे शुद्ध (लाजवाला) होय ॥४३॥४४॥

अश्वास्थिकीलमानीय सप्तांगुलप्रमाणकम् ॥
निखनेदश्वशालायां तदाश्वा यांति संक्षयम् ॥ ४५ ॥

घोडेके हाडकी सात अंगुलकी कील लेकर घोडसारमें गाडे तो घोडे यमपुरको जांय ॥ ४५ ॥

मंत्रः । ॐ पच पच स्वाहा ।
सप्तवारं पठेन्मंत्रं ततो कीलं समानयेत् ॥
चितावरस्य काष्ठस्य सप्तांगुलप्रमाणकम् ॥ ४६ ॥

यह मंत्र सात बार पढे और चितावरकीलकडीकी सात अंगुलकी कील ॥ ४६ ॥

सप्तवारं पठेन्मंत्रं ततः कीलं निवेशयेत् ॥
निखनेदश्वशालायामश्वा यांति यमालयम् ॥ ४७ ॥

सात बार मंत्र पढे और घोड़सारमें गाडे तो घोडे मरें ॥ ४७ ॥

मंत्रः । ॐ लोहितामुख स्वाहा ।
पुनर्वस्वृक्षेगृहणीयाच्चितावरस्य काष्ठकम् ॥
अष्टांगुली च द्वौ कीलौ निखनेतां च क्षेत्रको ॥
क्षेत्रहानिर्भवत्येव सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ४८ ॥

यह मंत्र पढकर पुनर्वसु नक्षत्रमें चितावरकोदो कोलें आठ आठ अंगुलकी खेतमें गाडे तो खेत नष्ट होय यह मैं सत्य २ कहता हूं ॥ ४८ ॥

मंत्रः । ॐ लोहितामुखे स्वाहा ।
पूर्वाषाढे च काष्ठस्य सप्तांगुलं च कीलकम् ॥
रजकगृहे निखनेत् न याति वस्त्रमुज्ज्वलम् ॥ ४९ ॥

मूलस्थ मंत्र पढ पूर्वाषाढानक्षत्रमें काठकी कील सात अंगुलकी धोबीके घरमें गाड़े तो वस्त्र उजले न होंय ॥ ४९ ॥

मंत्रः ॐ कुंभस्वाहा ।
उत्तराफाल्गुन्यृक्षे च बदरी काष्ठकीलकम् ॥
अष्टांगुलंसमादाय सप्तवारेण मंत्रितम् ॥
रजकगृहे निखनेद्वस्त्रं भवति नोज्ज्वलम् ॥ ५० ॥

मूलमें मंत्र है उसे पढकर उत्तराफाल्गुनीमें बेरी की लकडीकी कील आठ अंगुलकी सात बार मंत्र पढकर धोबीके घरमें गाडे तो वस्त्र उज्ज्वल न होय ॥ ५० ॥

मंत्र । ॐ जले स्वाहा । हस्तर्क्षे कोविदारस्य
त्र्यंगुलं कीलमुद्धरेत् ।। कुलालभांडेनि-
खनेत् भाडं न याति पक्वताम् ।। भोजनस्य
च पात्राणि यांति भग्नानि सर्वतः ।। ५१ ।।

मूलमें लिखा हुआ मंत्रपढकर हस्तनक्षत्रमें कदपलकी लकडी तीन अंगुलकी कुम्हारके आवेमें गाडे तो वर्तन न पकें और रसोईके पात्रसब फूट जांय ।। ५१ ।

गोक्षुरं च ह्यजाशृंगं तालबुखारं तथैव च ।। ५२ ।।
शूकरस्य च विट्चैव श्वेतगुंजकमूलकम् ।।
पाकग्रहे निक्षिपेच्च भग्नभांडानि जायते ।। ५३ ।।

गोखुरू छेरीके शृंग तालबुखारा और शूकरविष्ठा और सफेद गुंजाकी जड रसोईके मकानमें छोड देय तो वर्तन फूट जांय ।। ५२ ।। ५३ ।।

स्निग्धभांडेषु मंत्रेण मंत्रितेषु शुभेषु च ।।
तदा भांडानि सर्वाणि भग्नं यांति न संशयः ।। ५४ ।।

चिकने वर्तनोंमें मंत्र पढे तो सब वर्तन फूट जांय इसमें संशय नहीं है ।।५४।।

मंत्रः ॐ मदमदस्वाहा ।
चित्रर्क्षे मधूकवृक्षस्य चतुरंगुलकीलकम् ।।
तैलयंत्रसमीपे तु निखनात्तैलबंधनम् ।। ५५ ।।

मूलका लिखा मंत्र पढ चित्रानक्षत्रमें महुएकी कील चार अंगुलकी तेलीके कोल्हूके नीचे गाडे तो तेल न वहे ।। ५५ ।।

मंत्रः । ॐ दहदहस्वाहा ।
रजकश्लिष्टवस्त्रस्य मृदमानीय यत्नतः ।।
तेन त्रिकोणप्रतिमां कारयेदंगणेऽथवा ।। ५६ ।।

मूल मंत्र पढे और धोबीकी लादीकी माटी ले उसकी तीन कोनकी पुतली बनावे और अंगनमें ? ।। ५६ ।।

गृहे वा स्थापयेच्चैव तदा वस्त्राणि चैवहि ।।
निर्मलानि न भवंत्येव सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ।। ५७ ।।

वा गृहमें स्थापित कर उसके गृहमें छोडे तो वस्त्र उजले न होंय, यह मैंने सत्य सत्य कहा है ।। ५७ ।।

मंत्रः । ॐ नमोवज्रनेपातयवज्रशुरपतिआग्याहंफट्स्वाहा ।।
गंधकस्य च चूर्णं च क्षेपयेद्भोजनालये ।।
तदा सर्वाणि नश्यंति भोजनानि च सर्वशः ।। ५८ ।।

यह मंत्र पढकर गंधकका चूर्ण रसोईमें छोड़े तो सब भोजन नष्ट होय ।। ५८ ।।

श्वेतसर्षपमंत्रेण क्षेपयेत्क्षेत्रकेषु च ।।
ततो कीटा न जायंते निर्विघ्ना सस्यसंपदः ।। ५९ ।।

सफेद सरसों मंत्र पढकर खेतों में छोड़दे तो कीडे न लगे नाज निर्विघ्न होय ।। ५९ ।।

मंत्रः । ॐ नमः शुरभ्यौबलाछनपरिपतिसिलि स्वाहा ।
देवेभ्यो दंडवत्कृत्वा नमोच्चार्य्य पुनः पुनः ।।
सिद्धिमंत्रो ततो जातो नात्र कार्या विचारणा ।। ६० ।।

मूलस्थमंत्रपढकर देवताओं को वारंवार नमस्कार दंडवत् करे तो मंत्र सिद्धहोय इसमें विचार न करना ।। ६० ।।

श्वेतसर्षपवालू च सप्तवारेण मंत्रितौ ।।
क्षिपेत्क्षेत्रे तदा चैव सर्वोपद्रवनाशनम् ।। ६१ ।।

सपेद सरसों और वालू ले सात वार मंत्रपढकर खेतमें छोडे तो सब उपद्रव नष्ट होंय ।। ६१ ।।

सैंजनस्य च काष्ठस्य सप्तांगुलककीलकम् ।।
क्षेत्रे तं निखनेच्चापि न क्षेत्रं वर्द्धते तदा ।। ६२ ।।

सहिजनेकी कील सात अंगुलकी मंत्रपढकर खेतमें गाडे तो खेत न बढे ।। ६२ ।।

मंत्रः । ॐ नमोभंजनाथपतदविथाहरहर-
सिलिसिलिसर्वेषासनानातुंड बंधकुरु कुरु
हुंफटस्वाहा । ॐ उज्येन्नगरीमैरौवालेमहा-
देवभंडारफलफलहोहनुमंतसाखी । अस्ति
ह्यस्तिकरोत्युच्चैचौषधींश्चापि निक्षिपेत, ।।
तदाक्षेत्रे फलं पुष्पं भवेत्तत्र न संशयः ।। ६३ ।।

इस्थ मंत्र पढकर अस्ति२ उच्चस्वरसे कह क्षेत्रमें औषधी लगावे तो फूले फले इसमें संदेह नहीं है ।। ६३ ।।

षंढकरणम् ।

नरो यत्राकरोन्मूत्रं निखनेत्कृष्णवृश्चिकम् ।।
नपुंसको तदा यातोचोद्धृतेन पुनः पुमान् ।। ६४ ।।

मनुष्य जहां पर मूत्र करे वहां कृष्ण विच्छू गाडे तो नपुंसक होय और उखाडे तो फिर पुरुष होय ।। ६४ ।।

छपखुदियाकीटकमजामूत्रेण पिष्टितम् ॥
ताम्बूलेनखादयेद्यंनपुंसकत्वमाप्नुयात् ॥ ६५ ॥

छपुखुदियाकिरवा छेरीके मूत्रमें पीसकर ताम्बूलके संग पिलावे तो नपुंसक होय ॥ ६५ ॥

कृष्णतिलं गोक्षुरं च ह्यजादुग्धेन क्वाथितम् ॥
शीतं कृत्वा च खादेच्च तदा शुद्धो पुनः पुमान् ॥ ६६ ॥

कृष्ण तिल और गोखरूका छेरीके दूधमें क्वाय कर जब शीतल होय तब खाय तो फिर पुरुष होय ॥ ६६ ॥

गोरोचनंनवनीतंखादयेच्चापि मिश्रितम् ॥
नपुंसको भवेच्चैव यावज्जीवो न शुद्धचति ॥ ६७ ॥

गोरोचनमें नैनू मिलाकर खावे तो जबतक जीवे तबतक नपुंसक होय ॥ ६७ ॥

धत्तूरफलं शर्करां क्षभयेद्याति शुद्धताम् ॥ ६८ ॥

धतूरेका फल और शर्करा खाय तो शुद्ध होय ॥ ६८ ॥

भगबंधनम् ।

श्वेतगीदरिधूलिं च प्रमदापादतलस्य त्र ॥
बामस्य च समादाय लेपाद्याति च गाढताम् ॥ ६९ ॥

सफेद गीदरि और स्त्रीके बाम पादकी धूलि ले लेपन करे तो भग गाढा होय ॥ ६९ ॥

मंत्रः । ॐ अमुकभगबंधनं विस्फुरनं ध्रुव श्रोनितम् ।
नागवल्लीदलं मंत्रैः सप्तवारं च मंत्रितम् ॥
तद्रसे मर्दयेद्योनिं दृढीभूता न संशयः ॥ ७० ॥

मूल मंत्रको सात बार पढकर ताम्बूलदलोंका रस फाढकर योनिपर लेपकर मर्दन करे तो योनि दृढ होय ।। ७० ।।

मंत्रः । ॐ चिटीचिटीसाचिटीस्वाचिटीठः ठः ।

स्मशानवस्त्रं धावयेद्गोदुग्धचंदनेन वा ।।
मंत्रेण च समालेपान्न लिंगं जायतेदृढम् ।। ७१ ।।

चिताका कपडा गौके दूधसे धोवे और चंदनसे लपेटकर मंत्र पढकर लिंगमें लपेटे तो लिंग दृढ न होय ।। ७१ ।।

सप्तवारं च मंत्रेण पानीयं चापियोपिबेत् ।।
प्रातःकाले तदा चैव न भवेद्दोषतत्कृतम् ।। ७२ ।।

प्रातःकालमें सात बार मंत्र पढकर पानी पीवे तो शुद्ध होय ।। ७२ ।।

मंत्रः । ॐ वज्र कष्टीवज्रकीवार वज्रमें बाँधौ दसमे धार वज्र पानीमैं पियौतो डाइनि डाकिनी ना छिवैं जाघचापोकालीसी अन्यत्र ब्रह्माकी धीयासिसुडाकिनीमाकरवो मोरैं जीव भाति करैं चलै पानी करैं ग्रहज करैं पानी करैं सुनैंकैरहासी करैं न-यन कटाक्ष करैं अपनी हथेरी बडैं सवारैं किलनि पोतली आनि पतिया मोहै न लागैं मइ करैं ताको मरत कपरैंहूँ मोसिद्धिगुरुगुरु पाइश्रीमहादेवकी आज्ञा । क्लेशनिवारणम् ९

हरतालं खरलं कृत्वा लेपयेत्काष्ठपुत्रिकाम् ॥
द्वारेनिवेशयेत्तां च धूपयेद्यांति मक्षिकाः ॥ ७३ ॥

हरताल लेकर खरल कर काष्ठकी पुतली बनवाकर हरताल लगा द्वारपर टांगे और धूप दे तो गृहकी मक्षिका भागे ॥ ७३ ॥

अर्कदुग्धं च माषं च तिलं गुणसमन्वितम् ॥
कारयेद्वटिकां तां च कोष्ठे चैवाभि धारयेत् ॥
अर्कपत्रविधानेन चौषरा च पलायते ॥ ७४॥

अर्कदुग्ध माप तिल गुड इनकी बटी बनाके कोठेमें अर्कपत्रके ऊपर धरे तो चौसरा भागे ॥ ७४ ॥

बिडालविड्हरतालं मूषकं गृह्ययत्नतः ॥ ७५ ॥
तस्य देहे लिपेच्चैव प्रमुमोचचमूषकम् ॥
तदासर्वेपलायंते ये गृहेमूषकाःस्थिताः ॥ ७६ ॥

बिडालकी विष्ठा तथा हरताल ले यत्नसे मूसा पकरे और उस मूसेकी देहमें लगावे और छोड दे तो सब गृहके मूसे भागे ॥ ७५ ॥ ॥७६ ॥

मघार्क्षे चैव गृहणाति मधूकस्य च बांदकम् ॥
क्षेत्रे चैव निखनेत्तं न खादेत मूषकः ॥ ७७ ॥

मघानक्षत्रमें महुवेका बांदा ले खेतमें गाडे तो मूषकादिक न खाय ॥ ७७॥

कुंभीमूलं समादाय खट्वायांचैवबंधयेत् ॥
मत्कुणा नाशमायांतितदासर्वेनसंशयः ॥ ७८ ॥

कुंभीकी जड लेकर खटियामें बांधे तो सब खटमल कीडे नष्ट हो जांय ॥ ७८ ॥

राईसमायाः पुष्पं च तूलेनैवचवर्त्तिकाम् ॥
तैलेप्रज्वालयेद्दीपंदर्शनाद्यांति मत्कुणाः ॥ ७९ ॥

राई समाके फूल और रुईकी बत्ती बनाके राईके तेलमें भिगोय दीपक बारे तो देखकर खटमल भाग जांय ॥ ७९ ॥

अर्जुनस्य च पुष्पं च फलं लाक्षा च वारिजम् ॥
गुग्गुलुः शुक्लसर्पंखमूलं भल्लातकं तथा ॥ ८० ॥

अर्जुनके पुष्प और फल तथा लाख, कमल, गूगल सफेद सरफोकाकी जड और भिलावा ले ॥ ८० ॥

विडंगं त्रिफला लाक्षा चार्कदुग्धेन धूपयेत् ॥
तदा गेहे न तिष्ठंति मूषका वृश्चिकास्तथा ॥ ८१ ॥

वायविडंग त्रिफला लाख और अर्कदूधका धूप दे तो गृहमें मूसे विच्छू न रहें ॥ ८१ ॥

मुस्तासर्षपभल्लातकेवाक्षस्य च पुष्पकम् ॥
गुडार्को चैव निर्यासो धूपयेच्चैव मंदिरे ॥ ८२ ॥

मुस्ता सर्षप भिलावा केवाचके फूल गुड अकउड और रार इनकी धूप गृहमें देवे तो सब मूसे विषकीट भाग जांय ॥ ८२ ॥

तदा सर्वे पलायंते मूषका विषकीटकाः ॥
अमिल्ताशं च पर्यंके बंधयेद्यांति मत्कुणाः ॥ ८३ ॥

अमिलतासको पलंगमें लगावे तो खटमल भाग जांय ॥ ८३ ॥

लाक्षानिर्यासमाषं च सर्षपां चैव रंडकम् ॥
भल्लातकं विडंगं च ह्यर्कबीजंच पुष्करम् ॥ ८४ ॥

कौहापुष्पं समं सर्वं धूपयेच्च गृहे तथा ॥
भूता कीटाश्चडाकिन्योपलायन्तेनसंशयः ॥ ८५ ॥

लाख रार उर्द सरसों रंड भिलावा बिडंग अर्कबीज कमल और अर्जुनके फूल सब लेकर गृहमें धूप देय तो भूत प्रेत डाकिनी भाग जांय इसमें संशय नहीं ॥ ८४ ॥ ॥८५ ॥

बबूलपत्रधूपेन पिशुकीटो पलायते ॥ ८६ ॥

बबूल के पत्रोंकी धूप देवे तो पिशुवा भागे ॥ ८६ ॥

अंकोलबीजं चूर्णयित्वासप्ताहेनपुटंन्यसेत् ॥ ८७ ॥
तैले तस्य च यत्नेन कांस्यपात्रे समान्यसेत् ॥
प्रचंडधर्मस्पर्शाच्च तैलं निस्सरति यत्नतः ॥ ८८ ॥

अंकोलके बीज चूर्ण कर सात दिन तेलमें पुट दे यत्नसे कांसेके पात्रमें धर तेज घाममें रखे और तेल चुवावे ॥ ८७ ॥ ८८ ॥

मुंडयेत्मनुजं चैव तस्य मुंडे च लेपयेत् ॥
यदा केशाः प्ररोहंति तदातैलंप्रसिद्धचति ॥ ८९ ॥

एक आदमीका मूंड मुडाके उस मूंडमें तेल लगावे जो केश तुरंत जमें और बढ जांय तो जाने तेल सिद्ध भया ॥ ८९ ॥

आम्रशाखां तदा गृह्य निखनेच्च तदा भुवि ॥
तैलेन स्पर्शयेच्छाखां फलं पुष्पं च दृश्यते ॥ ९० ॥

आम्रकी डार ले भूमिमें गाडे और ऊपरसे तेल लगावे तो उसमें फल फूल जरूर करके देख पडें ॥ ९० ॥

प्रक्षिप्य तैले बीजं च कमलस्यचमर्दयेत् ॥
तत्तैलं च जले क्षिप्त्वा जलेपुष्पंचदृश्यते ॥ ९१ ॥

अंकोलके तेल में कमलबीज छोड मर्दन कर वह तेल जलमें छोडे तो जलमें पुष्प देख पडे ।। ९१ ।।

भंगजाहीरयोर्बीजमंकोलतैलेन स्पृशेत् ।।
तादृशौ चैव दृश्येते यादृशा चभवंतिहि ।। ९२ ।।

भांगके बीज और जाहीरके बीज अंकोलके तेल में भिजोवे तो वैसेही वृक्ष देख पडे जैसे रहे ।। ९२ ।।

यादृशं बीजं भवति तादृशो तैललेपनात् ।।
यादशोजीवक्षीरा चैप्राच्चलित न संशयः ।।
पत्रे पुष्पे च धातौ च लेपनादृश्यते तथा ।। ९३ ।।

जैसा बीज छोडे तैसा ही वृक्ष देख पडे, जैसाजीव छोडे तैसा जीव देख पडे, पत्तेमें पुष्पमें धातुमें लेपन करे तैसा ही देख पडे ।। ९३ ।।

गुंजां च मर्द्दयेत्तैलेपादयोस्तच्च लेपयेत् ।। ९४ ।।
पादुकाभ्यां च गच्छेत विनांगुष्ठप्रसाधिनीम् ।।
क्रोशमात्रप्रमाणं च तैलराजप्रभावतः ।। ९५ ।।

सपेद गुंजा तैलमें मर्दन कर तलवेमें लगावे तो विना खूंटीकी खराऊ पहिर कोशभरतकतेल के प्रतापसे चला जाय ।। ९४ ।। ९५ ।।

शिरीषबीजं निंबस्य निर्यासं मर्द्य लेपयेत् ।।
पादेनैव तदा गच्छेत्पादुकाभ्यां विना खुटीम् ।। ९६ ।।

सिरसके बीज नींबकीगांदिमिलाकरतलवे में लगावे तोविना खूंटीककी खराऊ पहिर चला जाय ।। ९६ ।।

सरस्य वर्तिकां तैले दीपं प्रज्वालयेत्तदा ।।
जले तां च विनिक्षिप्यतदापिज्वलते हि सा ।। ९७ ।।

सरकी वाती वनाय तेलमें भिगोय बारे और जलमें छोडे तो भी विशेष से बरे ।। ९७ ।।

कृष्णश्वानमृतं चैव कीटी यस्य भवेद्यदि ।।
दीर्घकीटपुरीषं च तिलकं कारयेत्तदा ।।
न पश्यंति तदा तं वै जना सर्वेभुवि स्थिताः । ९८ ।।

कृष्ण कुत्ता मरे और जब उसके कीडे बडे होवें तब तिनकी विष्ठा ले तिलक करे तो पृथ्वीमें स्थित कोई जन न देखे ।। ९८ ।।

कटुतुंबीबीजतैलं लेपयेत्पर्वतोपरि ।।
यत्र चालयेत्पर्वतं तत्र चलति निश्चितम् ।।
अंकोलतैलस्य कृतिमित्थं कथितवानहम् ।। ९९ ।।

इति श्रीअवस्थीप्रयागदत्तसुतरामचरणविरचिते वार्त्तिके रुद्रयामले संस्कृते चानेककार्य-कथनं नाम द्वितीयः पटलः ।। २ ।।

करुई तोंबीके बीज और तेल पर्वतके ऊपर लगावे तो जहाँ पर्वत चलावे तहाँ चला जाय, अंकोलतेलकी कृतिभी इसी तरह हमने कही है ।। ९९ ।।

इति रुद्रयामले भाषाटीकायां द्वितीयः पटलः ।। २ ।।

मंत्रः । ॐ कारमुखे विधूजि हैं ॐ हः चेचककजप स्वाहा ।
प्रथमं पूजनं कृत्वा मंत्रेण गृह्य कज्जलम् ।।
हस्ते पादतले चैव लेपयेत्सुसमाहितः ।।
त्रिलोकस्य च वृत्तांतं ज्ञायते नात्र संशयः ।। १ ।।

यह मंत्र पढकर प्रथम पूजन करे और मंत्र पढ काजर ले हाथमें तथा पावके तलवेमें लगावे तो तीन लोकका हाल जाने इसमें संशय नहीं है ।। १-।।

मंत्रः । ॐ ह्रीं श्रसंभोगवतीकरन पिशाचनी प्रचंडवेगनी स्वाहा । मृद्गोमयेन शुद्धायां
भूम्यामास्तीर्यंयेत्कुशान् ।। नैवेद्य च
ततो दद्यात्महादेवं च पूजयेत् ।। २ ।।
बिसोर्णं बंधयेद्धस्ते मंत्रं रात्रौ जपेत्ततः ।।
तत्रार्द्धरात्रौ देवी च ह्यागत्य सुवदेद्वचः ।। ३ ।।

यह मंत्र जप माटी गोबरसे भूमि शुद्ध कर कुश बिछाके महादेवका पूजन करे, नैवेद्य देय कमलका सूत्र लेकर हाथमें बांधे, रात्रिको मंत्र जपे तो अर्द्ध रात्रिको देवी आकर बातें करे ।। २ ।। ३ ।।

मंत्रः । ॐ आगच्छ आगच्छ चामुंडे ह्रीं स्वाहा ।
गोरोचनं केशरं च गोदुग्धेन समन्वितम् ।।
एतैरष्टदलं यंत्रं कमलं भूर्जपत्रको ।। ४ ।।

मंत्र पढ़ गोरोचन केशर दुग्ध मिलाके इन वस्तुओंसे भोजपत्रपर अष्टपत्रकमल लिखे ।। ४ ।।

मध्ये प्रतिमां बीजं च लिखेच्च सुसमाहितः ।।
मस्तके धार्यं यंत्रं च जपेत्स्वप्ने च देवताः ।।
वार्ता कुर्वंति सततं मंत्रस्य च प्रसादतः ।। ५ ।।

मध्यमें देवीकी प्रतिमा लिखे, बीजमंत्र लिखे, यंत्रको मूंडमें धरे और मंत्र जपे तो मंत्र के प्रतापसे स्वप्नमें देवता बातें करे ।। ५ ।।

मंत्रः । ॐ ह्रीं त्रिंचितिनी पिशाचिनी स्वाहा ।
कटुतुंबीमूलबीजौ दीर्घदद्रुघ्नमूलकम् ।। ६ ।।

मंत्रेण मंत्रितं चैव शिरे बद्ध्वा च स्वापयेत् ।।
स्वप्ने तदा देवताश्च वार्त्ता कुर्वंति तेन वा ।। ७ ।।

मूलमें मंत्र है सो जपे, कटु तूंबीकी जड़ और बीज ले और कसौंदीकी जड़ ले मंत्र जपके शिरपर बांधके सोवे तो उसके संगस्वप्नमें देवता बातें करें ।। ६ ।। ७ ।।

मंत्रः । ॐ नमो भगवते रुद्राय कर्णपिशाचाय स्वाहा ।
सर्वाजने सिद्धयेच्च मंत्रमघोरसंज्ञकम् ।।
विनाघोरेण सिद्धिर्न जायते नात्र संशयः ।। ८ ।।

मंत्र पढ़ अंजन करे । सब अंजनोंमें सिद्ध करनेवाला यह अघोर मंत्र है, बिना अघोरके सिद्ध नहीं होती इसमें संशय नहीं है ।। ८ ।।

मृत्कालिकां च निर्माय पूजयेद्धूपदीपकैः ।। ९ ।।
अष्टादशसहस्रं तु जपेन्मंत्रं समाहितः ।।
तदा च सर्वसिद्धिं हि दर्शयेन्नात्र संशयः ।। १० ।।

माटीकी कालिका बनाकर पूजे, धूप दीप देवे, सावधानतासे अठारह हजार मंत्र जपे तो सब सिद्धि देख पडे ।। ९ ।। ।। १० ।।

मंत्रः । ॐ बहुरूपे विश्वतैजसे ॐविद्याधरमहेश्वरं जपाम्यहं महादेवसर्वसिद्धिप्रदायकम् ।। रुद्राय नमो बहुरूपाय नमो स्वरूपाय नमः ततः पूषाय नमः यक्षरूपाय नमः नुदे नद स्वाहा । इमं मंत्रं पठित्वा च पूजयेद्गिरिजापतिम् ।। तदा सिद्धिर्भवेच्चैव महादेवप्रसादतः ।। ११ ।।

अघोरमंत्र मूलमें लिखा है वह पढकर गिरिजाके पतिको पूजन करे तो महादेवके प्रसादसे सिद्धि होय इसमें कुछ भी संदेह नहीं है ।। ११ ।।

करेलापत्रमानीय द्विजवेश्मानलंदले ।।
मनुजस्य चितायां च स्थित एकाग्रमानसः ।। १२ ।।

करेलेके पत्ते ले ब्राह्मणके घरकी अग्निको ले मनुष्यकी चिताके तीर एकाग्रचित्त करके बैठकर ।। १२ ।।

रजकश्लिष्टमृच्चैव तथा वल्मीकसंभवा ।।
तयोर्दीपं विनिर्माय प्रज्वाल्य च प्रयत्नतः ।। १३ ।।

धोबीकी लादीकी तथा वल्मीककी माटीका दीया बनाके प्रज्वलित करे ।। १३ ।।

दीपप्रज्वलनमंत्रः । ॐ जुलितपिधादेसाय स्वाहा । दीपस्थानमंत्रः । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय घरधामवं धूवंधश्रीमते वसुपते स्वाहा । ॐ नमो भगवते सिद्धसवाराय ज्वालय ज्वालय पातय पातय बंध बंध संहर संहर दर्शय दर्शय निधीन्मे । मंत्रेणानेन दीपं च प्रार्थयेत्सुसमाहितः ।। कज्जलमंत्रः । ॐ काली काली महाकाली रछदजनमोविहेंस्वाहा । कज्जलं मंत्रयेत्तेन मंत्रेण चक्षुरंजयेत् ।। अंजनकरणमंत्रः । ॐ ह्रीं सर्वसर्वहितें क्लीं सर्वसर्वहितें सर्व औषधीप्रानीहितेंनिरतैं नमो नमः

स्वाहा । मंत्रेण चांजयेन्नेत्रं सुवर्णस्य शला-
कया ।। श्वेतवस्त्रेण बध्नीयात् नेत्रे च सुस-
माहितः ।। १४ ।।

दीप जलानेका और स्थापनाका तथा कज्जलका मंत्र पढकर कज्जल तैयार कर अंजनका मंत्र पढकर सुवर्णकी शलाकासे अंजन करे, और सपेद कपडेसे सुंदर तरहसे नेत्र बांधे ।। १४ ।।

पत्रद्रोणे स्थितंकत्र घृतं दधि विलोकयेत् ।।
तदग्नौ न निर्दहेच्च पुनः स्नानं समाचरेत् ।। १५ ।।

पत्तोंकी दोनकी में घर देखे तो अग्निमें न जरे, फिर स्नान करे ।। १५ ।।

कंठाच्च सुशुचिर्भूत्वा फलाहारं दिनद्वयम् ।।
शिरे चैव शिखां बद्ध्वा जपेन्मंत्रं ततः परम् ।। १६ ।।

कंठसे सुंदर पवित्र होकर फलोंको भोजन करे, दो दिन शिरमें शिखाको बांध मंत्र जपे ।। १६ ।।

मंत्रः । ॐ नमो भगवते रुद्राय उलमाहेल
महेल हुल्हुल बिहल मिमिहुलु मिमिहुल
हर हरजक्ष क्षपूजिते जक्षकुमार्ये सुलोचन
स्वाहा । पूर्वोक्त कालिकामूर्तिमग्रे स्थाप्य
जपेत्ततः ।। सूर्योदयादस्तमये जपेच्चैव
दिनद्वयम् ।। १७ ।।

पहिले कही कालिकाकी मूर्ति बनाके आगे स्थापन करे और सूर्योदयसे सूर्यास्ततक दोनों दिन जपे ।। १७ ।।

ततो निर्मुच्य नेत्रे पश्येद्भूमौ निधानकम् ।।
शरत्काले विशेषेण वस्तु सर्वं भुवि स्थितम् ।। १८ ।।

फिर आँखियोंमें लपेटा हुआ वस्त्र खोले और भूमिमें द्रव्य देखे । शरत्कालमें विशेषसे भूमिकी सब वस्तु देखे ।। १८ ।।

हरिद्रारक्तमूलं च सिंदूरेण समन्वितम् ।।
अर्कसूत्रे वेष्टनं च कारयेद्वर्तिकां बुधः ।। १९ ।।

हरदीकी लाल गांठ ले उसमें सिंदूर मिलावे और आकका सूत लपेटे और बत्ती बनावे ।। १९ ।।

तिलतैलेन संयोज्य मृद्दीपे धार्यते च ताम् ।।
तैलपूर्णं च दीपं च स्मशाने सुनिवेशयेत् ।। २० ।।

वह बत्ती तिलके तेलमें बोरके माटीके दीपमें धरे और दीपमें तेल भर स्मशानमें धरे ।। २० ।।

कपाले कारयेच्चैव कज्जलं चैव चांजयेत् ।।
भूमौ निखातद्रव्यं च पश्यच्चैव न संशयः ।। २१ ।।

और कपालमें कज्जल पार नेत्रोंमें लगावे तो भूमिमें गडा द्रव्य दीखे इसमें संशय नहीं है ।। २१ ।।

कृष्णकाकस्य जिह्वां च मांसं चैव निगृह्य वै ।।
अर्कसूत्रेण वर्त्तिं च ह्यजाघृतसमाप्लुताम् ।। २२ ।।

कृष्ण काककी जीभ और मांस ले आकके सूतमें लपेटकर बत्ती बना छेरीके घृतमें भिगोय ।। २२ ।।

दीपं प्रज्वालयेच्चापि निशायां सुसमाहितः ।।
तया हि चांजयेन्नेत्रे भूमिखातं च दृश्यते ।। २३ ।।

रात्रिमें दीप बारके उस बत्तीसे कज्जल कर नेत्रोंमें लगावे तो पृथ्वीका द्रव्य दीखे ।। २३ ।।

फिर आंखियोंमें लपेटा हुआ वस्त्र खोले और भूमिमें द्रव्य देखे । शरत्कालमें विशेषसे भूमिकी सब वस्तु देखे ।। १८ ।।

हरिद्रारक्तमूलं च सिंदूरेण समन्वितम् ।।
अर्कसूत्रे वेष्टनं च कारयेद्वर्तिकां बुधः ।। १९ ।।

हरदीकी लाल गांठ ले उसमें सिंदूर मिलावे और आकका सूत लपेटे और बत्ती बनावे ।। १९ ।।

तिलतैलेन संयोज्य मृद्दीपे धार्यते च ताम् ।।
तैलपूर्णं च दीपं च स्मशाने सुनिवेशयेत् ।। २० ।।

वह बत्ती तिलके तेलमें बोरके माटीके दीपमें धरे और दीपमें तेल भर स्मशानमें धरे ।। २० ।।

कपाले कारयेच्चैव कज्जलं चैव चांजयेत् ।।
भूमौ निखातद्रव्यं च पश्यच्चैव न संशयः ।। २१ ।।

और कपालमें कज्जल पार नेत्रोंमें लगावे तो भूमिमें गडा द्रव्य दीखे इसमें संशय नहीं है ।। २१ ।।

कृष्णकाकस्य जिह्वां च मांसं चैव निगृह्य वै ।।
अर्कसूत्रेण वर्त्तिं च ह्यजाघृतसमाप्लुताम् ।। २२ ।।

कृष्ण काककी जीभ और मांस ले आकके सूतमें लपेटकर बत्ती बना छेरीके घृतमें भिगोय ।। २२ ।।

दीपं प्रज्वालयेच्चापि निशायां सुसमाहितः ।।
तया हि चांजयेन्नेत्रे भूमिखातं च दृश्यते ।। २३ ।।

रात्रिमें दीप बारके उस बत्तीसे कज्जल कर नेत्रोंमें लगावे तो पृथ्वीका द्रव्य दीखे ।। २३ ।।

कमलसूत्रस्य वर्त्तिं कारयेत्सुविधानतः ।।
एरंडपत्ररसेन चार्द्रयेत्तां पुनः सुखेत ।। २४ ।।

कमलके सूतकी बाती बनाकर एरंडके पत्रके अर्कमें भिगोके फिर सुखावे ।। २४ ।।

अंकोलतैले प्रज्वाल्य कज्जलं समकारयेत् ।।
पुष्यर्क्षे चांजयेच्चैव त्रयोदश्यां स्वनेत्रके ।।
पृथ्वीनिखातद्रव्यं तु दृश्यते नात्र संशयः ।। २५ ।।

और अंकोलके तेल में बाती भिगोयके दीप बारे और कज्जल ले पुष्य-नक्षत्रमें तेरसको अपने नेत्रों में अंजन करे तो भूमिमें गड़ा द्रव्य दीखे इसमें संदेह नहीं है ।। २५ ।।

दीपमाल्यां स्मशाने न कज्जलं च कपालके ।।
कृत्वा तु चांजयेन्नेत्रे भूद्रव्यमवलोकयेत् ।। २६ ।।

दिवालीकी रात्रिको श्मशानमें कपालमें कज्जल करे और अंजन करे तो भूमिका द्रव्य दीखे ।। २६ ।।

काकरारक्तसंश्लिष्टं मनः सिलसमन्वितम् ।।
तदा भूनिखातद्रव्यं चांजनेनैव दृश्यते ।। २७ ।।

काकके रक्तमें भिगोय मनसिल ले नेत्रमें अंजन करे तो भूमिमें गड़ा धन दीखे ।। २७ ।।

तुलसीं शीघ्रमृतस्य पुरुषस्योदरस्य च ।।
जलमानीय यत्नेन गोरोचनं च शर्कराम् ।। २८ ।।

तुलसी शीघ्र मरे मनुष्यके पेटका पानी, गोरोचन और शर्करा ।। २८ ।।

एकत्र कारयेत्तां च घर्मे स्थाप्य दिनाष्टकम् ।।
नवमे दिवसे चैव कारयेदंजनं स्वके ।। २९ ।।

नेत्रे तदा च पश्येत सकलान्निधीन्शुभात् ।।
प्रसिद्धमंजनं चैव सर्वज्ञेन च भाषितम् ।। ३० ।।

इकट्ठा कर घाममें आठ दिन धर नवें दिन अपने नेत्रोंमें अंजन करे और सब निधियोंको देखे यह प्रसिद्ध अंजन सर्वज्ञने कहा है ।। २९ ।। ३० ।।।।

मंत्रः ।। नमो भगवते रुद्राय डामरेश्वराय
सिलिशालपुननेनागवेतालिनिस्वाहा । । इति
सर्वजनानां च मंत्रं चैव ह्युदाहृतम् ।। पुष्यर्क्षे
च शनौ वारे तुलसीवृक्षमूलकम् ।। ३१ ।।
सूक्ष्मं कृत्वा जलेनैव लघुकन्याकुमारयोः ।।
अंजयेदंजनेनैव तदा पश्यन्निखातकम् ।।
पाताले च स्थितं वस्तु तदा दृश्यति निश्चितम् ।।३२ ।।

यह अंजन करने का मंत्र है इसको पढे और पुष्यनक्षत्रमें शनिवारको तुलसीकी मूल ले जलमें महीन पीस छोटी कन्या वा बालकके नेत्रोंमें अंजन लगावे तो गडी वस्तु दीखे, पातालकी धरी वस्तु निश्चयसे दीखे ।। ३१ ।। ३२ ।।

कृष्णपक्षचतुर्दश्यां रविवारो यदा भवेत् ।।
गुरवैवृक्षस्य मूलं जलेन सह पेषयेत् ।। ३३ ।।
स्त्रीदुग्धं क्षिपेत्तस्मिन्यदि पुत्रो भवेत्तदा ।।
तदंजनं कारयेद्वै तदा द्रव्यं स पश्यति ।। ३४ ।।

कृष्णपक्षचतुर्दशीको रविवार पड़े तो गुरवे वृक्षकी जड जलमें पीस उसमें पुत्रवती स्त्रीका दुग्ध छोडे और अंजन करे तो द्रव्य दीखे ।। ३३ ।। ३४ ।।

गोदुग्धे रक्तसर्षपं तिलं पिष्ट्वा तथापि च ।। ३५ ।।
शशवृक्षस्य बीजं च तस्मिन्क्षिप्त्वा स लेपयेत् ।।
यत्रस्थितो ज्ञायते च तत्र पश्यति नान्यथा ।। ३६ ।।

गोदुग्धमें रक्त सरसों तिल डार पीस दानके बीज तिसमें छोडकर लेपन करे तो जहाँ स्थिर होय तहाँही वस्तुज्ञान होय, यह अन्यथा नहीं ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥

अदृष्टकरणम्

चतुर्लक्षं जपेन्मंत्रं नग्नो भूत्वा स्मशानके ॥
प्रातःकाले यक्षिणी च वस्त्रैकं च ददाति तम् ॥ ३७ ॥

नग्न होकर स्मशानमें चार लक्ष मंत्र जपे तो प्रातः–समय यक्षिणी एक वस्त्र देय सो ॥ ३७ ॥

वस्त्रमाच्छाद्य गच्छंतं तं न पश्यंति केचन ॥
गृहे तिष्ठन्सदा द्रव्यं स पश्यति न संशयः ॥ ३८ ॥

वस्त्र ओढकर जहाँ जाय तहाँ कोई न देखे, वह गृहमें बैठे सबको देखे और सब द्रव्य देखे इसमें संदेह न करना ॥ ३८ ॥

मंत्रः । ॐ ह्रीं ह्रीं स्मशानवासिनी स्वाहा ।
कार्तिकस्य कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां विशेषतः ॥
स्मशानेषु जपेन्मत्रं बलि पूजां तथाकरोत् ॥ ३९ ॥

इस मंत्रको कार्तिककृष्णपक्षकी चतुर्दशीको स्मशानमें जपे, बलिदान पूजन करे ॥ ३९ ॥

अंकोलतैले प्रज्वाल्य दीपं कज्जलमाचरेत् ॥
कपाले स्थाप्य तं चापि नेत्रयोर्यदि ह्यंजयेत् ॥
कोपि न पश्यंति तं च महादेवप्रसादतः ॥ ४० ॥

अंकोलके तैलमें दीप बारे, कज्जल करे और कपालमें धर नेत्रोंमें लगावे तो उसको महादेवके प्रसादसे कोई न देखे ॥ ४० ॥

अर्कफलस्य तूलं च कार्पासं कमलं तथा ।।
एषां सूत्रैः वर्त्तिकां च कार्येद्विधिना बुधः ।।
मनुष्यकपाले कृत्वा कज्जलं नेत्रमंजयेत् ।। ४१ ।।

अर्कफलके भीतरकी रुई और कपास और कमलके भीतरका सूत्र इनके सूतकी वाती बना मनुष्यके कपालमें कज्जल कर नेत्रोंमें लगावे ।। ४१ ।।

मंत्रः । ॐ फट काली काली महाकाली मांसशोणितभोजनसुखे देवी ममेयसिति- मानर्षोतीमानशोति । हरीतक्यां वचं पिष्ट्वा गुटिकां कारयेद्बुधः ।। त्रिधातोर्गुटिकां धृत्वा मुखे न पश्यति केचन ।। ४२ ।।

यह मंत्र पड हरडमें वच पीस गुटिका बनाके तीन धातुसे मढावे और संमुखमें रखे तो कोई नहीं देखे ।। ४२ ।।

पादुकासाधनम्

असगंधं तथा तैलमंकोलस्य विशेषतः ।।
श्वेतसर्षपमेकत्र हस्तौ पादौ प्रलेपयेत् ।।
शतयोजनं च गच्छेत् नात्र कार्या विचारणा ।। ४३ ।।

असगंध अंकोलका तेल और सपेद सरसों एकत्र कर हाथ पांवोंमें लगावे तो सौ योजन चले इसमें विचार नहीं ।। ४३ ।।

कंदुरीमूलमादाय तिलतैलेन क्वाथयेत् ।।
जंघे पादे च लेपेन चतुर्योजन गच्छति ।। ४४ ।।

कंदुरीकी जड ले तिलके तेलमें क्वाथ कर जंघामें तथा तलुवोंमें लगावे तो चार योजन चले ।। ४४ ।।

कंडुर्य्यामलवयोमूलं पिष्ट्वा चांकोलतैलके ।।
पादलेपेन गच्छंति मनुजाः शतयोजनम् ।। ४५ ।।

कंडुरी और आंवलेकी जड ले अंकोलके तेलमें पीसकर तलुवोंमें लगावे तो सौ योजन चले ।। ४५ ।।

मंत्रः । ॐ नमः चंडिकायै गगनं गमय गमय चालय वेंगवाहिनी ॐ ह्रीं स्वाहा । कृष्णकाकस्य हृन्नेत्रे जिह्वां चैव मनःसिलम् ।। सिंदूरं गैरिकं चैवामरवल्लीं च मालतीम् ।। ४६ ।। रुद्रजटां मस्तकीं च मूलमेकत्र कारयेत् ।। पादयोर्लेपयेच्चैव सहस्रं स च गच्छति ।। ४७ ।।

काले काकका हृदय अर्थात् करेजा नेत्र और जिह्वा तथा मनशिल सिंदूर गैरिक अमरवेलि मालती रुद्रजटामस्तकीकी जड़ ये सब एकत्र कर पांवके तलुवोंमें लेप करके एक सहस्र बार मंत्र जप करे तो सिद्धि होय ।। ४६ ।। ।। ४७ ।।

मंत्रः । ॐ नमो भगवते रुद्राय नमो हरितगदाधराय त्रासय त्रासय क्षोभय क्षोभय चलने वलने स्वाहा । पारदं च त्रयं टंकं चिल्हनीडे निधापयेत् ।। यस्मिन्नीडे भवेदंडास्तस्मिन् समवधारयेत् ।। ४८ ।। दीर्घ-

सूच्या पारदेषु छिद्रं समवकारयेत् ।। तद्वि
ष्ठां लेपयेच्छिद्रे भोजनार्थं तु यत्नतः ।। ४९ ।।

ओदनादिकमाधाय यदंडानि बिभेद सा ।।
तदा गृहणीयात्पारदं गुटिकां समकारयेत् ।।
मुखे निधाय गुटिकां गच्छेद्द्वादशयोजनम् ।। ५० ।।

३ टंक पारा चिल्हरिके घुरघुच्चेमें धर दे और जब इसके अंडा होय तब बारीक शूचीसे पारे में छेद कर चिल्हरिके बिष्ठासे लेप कर छिद्रमें लपेट देवे और भोजनके अर्थ भात धर दे और नीडमें जब अंडा फोरे तब पारा उठाय बटिका बनाके मुखमें धारण करे तो बारह योजन चले ।। ४८ ।। ४९ ।। ५० ।।

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रुं फट्चीलाचक्रे सुरं परातपरे
पादुकागमनं देहि देहि मे स्वाहा। मंत्रेण
पूजयेच्चैव गुटिकां सुविधानतः ।। अमृतसं-
जीवनविधि महादेवेन भाषितम् ।।५१ ।।

पहिले गुटिका लाकर इस मंत्रसे पूजन करे। यह अमृतसंजीबिनीविधि श्रीमहादेवजीने कही है। पूजन करके जब २ मुखमें धरे तब २ बारह योजन चले ।। ५१ ।।

महादेवस्य लिंगैकं पूजयेदंकोल्लसंनिधौ ।।
जलपूर्णं घटं चैव तत्रैव च निधापयेत् ।। ५२ ।।
पूजयेल्लिंगं पृथक् पृथक् स्थाप्य पुनः पुनः ।।
प्रहरे प्रहरे चैव पूजयेद्दिनरात्रिकम् ।।
यावल्लिंगं पूजयेच्च ह्यघोरेण समं ततः ।। ५३ ।।

एक अंकोलवृक्षके नीचे जलपूर्ण कलश धर उसी पर महादेवके लिंगका एक २ प्रहरपर अघोर मंत्रसे रातदिन पूजन करे ।।५२ ।। ५३ ।।

फलं पुष्पं सुहारीं च निवेद्य सुसमाहितः ।। ५४ ।।
घटे निधाय तां पूजां नित्यं नित्यं प्रयत्नतः ।।
यदांकोले फलं पातं फलमादाय पक्वकम् ।। ५५ ।।
बीजानि च पृथक् कृत्वा दीर्घभांडे समाधयेत् ।।
तस्य मुखे टंकणं च मृदा च लेपयेत्मुखम् ।। ५६ ।।
उच्चे स्थाप्य च तं भांडं शुष्कयेत्सुसमाहितः ।।
अधश्छिद्रं च कर्तव्यं ताम्रपात्रं निधापयेत् ।। ५७ ।।

फलफूल पूरी सावधान होकर धरे, कलशके समीप वा घडाके भीतर रोज २ यत्नसे पूजा धरे और जब अंकोलमें फल लगे तब पक्वफल लेकर बीज-दूर कर एक बडी हांडीमें धरे, ऊपरसे सोहागा डाले, माटीसे मुख बंद कर सुखानेके वास्ते घाममें ऊँचेपर धरदे, पेंदीमें छिद्रकर नीचे ताम्रका बरतन धर देवे ।। ५४ ।। ५५ ।। ५६ ।। ५७ ।।

घर्मे स्थाप्ये च भांडे च तैलं निःसरते तदा ।।
अर्द्धमासं च तैलं हि मृतस्य नस्यमाचरेत् ।। ५८ ।।

घामके जोरसे पंदरह दिनमें तेल निकसे तब वह तेल लेकर मरे हुए लोथके नासिकामें डाले ।। ५८ ।।

विषभक्षणप्रेतेन मृतो वा कालतोपि वा ।।
सजीवो तत्क्षणाद्याते महादेवप्रसादतः ।। ५९ ।।

जो विष खाके या और कोई कालसे मरा होय तो नास दियेसे क्षणमात्रमें महादेवके प्रसादसे जीवे ॥ ५९ ॥

पारदं मानुषं वीर्यं समभागं समानयेत् ॥
तैले समर्थ्य यत्नेन मृतस्य नस्यमाददेत् ॥ ६० ॥
कालतो गतजीवस्य देहे जीवो प्रविश्यति ॥
महादेवेन कथितं मिथ्या नैव भविष्यति ॥ ६१ ॥

तथा तेलमें पारा या मनुष्यका वीर्य बराबर २ मिलाके नास दे तो मरे हुये मनुष्यको चेत करे यह महादेवका वाक्य है मिथ्या नहीं हो सकता है ॥ ६० ॥ ६१ ॥

पुष्यार्के गुरमैमूलं तप्ततोयेन मर्दयेत् ॥
धेलप्रमाणपीतेन मृत्युं न स्यादकालतः ॥ ६२ ॥
मंत्रः । ॐ अघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः स्वाहा ।
सर्वतः सर्वसर्वेभ्यो नमस्ते रुद्ररूपाय ॥

इति श्रीअवस्थिप्रयागदत्तसुतरामचरणविरचिते रुद्रयामले भाषावार्तिकात्संस्कृते अमृतादिकथनं नाम तृतीयःपटलः ॥ ३ ॥

पुष्यार्कमें गुरमाकी मूल तप्त जलमें मर्दन कर एक धेलाभर(८ मासे) नित्य प्रति पीवे तो अकालसे मृत्यु नहीं होवे और यह मंत्र जपे तो सिद्धि होय ॥ ६२ ॥

इति हिन्दीटीकायां तृतीयः पटलः ॥ ३ ॥

बह्वाहारकथनम् ।

विभीतपत्रमंत्रेण दक्षजंघेन पीडयेत् ।।
तदा विंशज्जनस्यैव ह्याहारं कुरुते नरः ।। १ ।।

बहेरेका पत्ता दहिनी जंघासें पीसे अरकु लगावे तो बीस जनोंका आहार भक्षण करे । मंत्रसे पत्तेका पीडन करे ।। १ ।।

विभीतपत्रं दंतं च श्वेतश्वानस्य निश्चितम् ।।
कटौ बंधनमात्रेण बहुभुग्जायते नरः ।। २ ।।

बहेरेका पत्ता तथा सुपेद कुत्तेका दांत कमरमें बांधे और मंत्रका जप कर सिद्ध करे तो बहुत भक्षण करे ।। २ ।।

संध्यायां च समादाय ह्यमलतालस्य पुष्पकम् ।।
मालां निर्माय यत्नेन कंठे कृत्वा भोजयेत् ।। ३ ।।
कौपीनमोचनं कृत्वा तदा च बहुभोजयेत् ।। ४ ।।
मंत्रः ॐ नमः भूतादिपतये ग्रस ग्रस शोषय
शोषय भैरवी आज्ञापयती स्वाहा ।
वमनं कृत्वा तु तं गृह्य शिखायां च निवेशयेत् ।।
तदा बहु करोत्येव भोजनं नात्र संशयः ।। ५ ।।

संध्याके समय मंत्रसे फिरअरी जिसमें अमिलतास होती है तिसके फूलकी माला बनाके यत्नसे कंठमें बांधे और कौपीन छोडकर बहुत भोजन करे । मंत्र मूलमें लिखा है वह पढे अथवा वमन कर मंत्र से वही माला शिखामें बांधे तो बहुत भोजन करे ।। ३ ।। ४ ।। ।। ५ ।।

मंत्रः । ॐ नाडी वेगे उर्वशी स्वाहा ।

इस मंत्रका भोजनके समय जप करे।

केकरस्यार्द्धक्षारस्य बीजं पिष्ट्वा गुणेन च ।।
गुटिकां बंधयेत्त्रीणि ताम्रे लौहेऽथ धारयेत् ।।
मुखे निधाय तं चैव क्षुत्पिपासा न बाधते ।। ६ ।।
मंत्रः । ॐ सासं सरीरं अमृतमाषाय स्वाहा ।

केकरके बीज तथा अर्द्धक्षारके बीज पीसके मिठाईमें मिलाके गोली बांध तीन तामे वा लोहेमें यंत्र बनाकर मुखमें धारण करे तो क्षुधा या पिपासा बाधा न करे, मूलस्थ मंत्र पढे ।। ६ ।।

कमलफलं तंडुलं शाटिकस्य च पाचयेत् ।।
अजादुग्धेन तं चापि घृतेन च स भोजयेत् ।।
तदा द्वादश दिनानि क्षुधा नैव च बाधते ।। ७ ।।

कमलगट्टा और साठीके चावल छागीके दूधमें पकाके घी में मिला खावे तो बारह दिन क्षुधा न लगे ।। ७ ।।

जंबीरस्य त्वचं चापि साल्लिकस्य तथैव च ।। ८ ।।
बिंबाबीजानि संगृह्य घृतेन सह पेषयेत् ।।
एषां यो भोजयेच्चैव न क्षुधा बाधते च तम् ।। ९ ।।

जंभीरीनींबूकी छाल तथा साल्लिककी छाल कुंदरूके बीज सबको घृतमें मिला प्रातःकाल भोजन करे तो क्षुधा न लगे ।। ८ ।। ९ ।।

ददुघ्नस्य च बीजं च कशेरुं कमलस्य च ॥
मूलं गोदुग्धपक्वं च खादेन्मासं न भक्षति ॥ १० ॥

पमारके बीज कसेरु और कमलकी जड गौके दूधमें पक्वकर भक्षण करे तो एक महीना भूख न लगे ॥ १० ॥

उमरीफलपक्वं च तैलेन च समन्वितम् ॥
अंकोलेन च तं चैव खादेन्मासं न बाधते ॥ ११

उमरीके पक्के फल तेलमें मिलाके अंकोलकी छाल या तेल मिलाके खावे तो एक मासतक क्षुधा न लगे ॥ ११ ॥

क्षुधा चैव पिपासा च ह्येतत्तंत्रं प्रकाशते ॥
महादेवेन कथितं न तथान्यत्प्रभाषणम् ॥ १२ ॥

क्षुधाका तथा पिपासाका तंत्र यह शिवजीने कहा है, सत्य है ॥ १२ ॥

ॐ गणपति बीर वसैं मासानजो मैं मांगौ सो तुम आनुपांच लडुवा सिर सिंदुर त्रिभुवन मागें चंपेके फूल अष्टकुलि नाग मोहु नो नारी बहुत्तरि कोटा मोहु इंद्रकी बेटी सभा मोहु आवती आवती इस्त्री मोहु जाता जाता पुरुष मोहु डांवा अंग वसैं नरसिंहजी वने क्षेत्रपलाजें आवै मारमर करंतो सो जाइ हमारे पाउ परंता गुरुकी

शक्ति हमारी भक्ति चलो मंत्र आदेश गुरुकी
पूजयेद्घृतखंडाभ्यां गुग्गुलैर्होममाचरेत् ॥
वनसमिद्भिश्च शतं त्रिकं पंचाशच्चैककम् ॥
एतानि चाहुतिं दत्त्वा मंत्रमुच्चार्य यत्नतः ॥ १३ ॥

ऊपर लिखे मंत्रका घृत खांड गुग्गुलसे होम करे, वनकी समिधा ३५१ से होम करे, घी खांड गुग्गुल एकमें मिलाके ३५१ आहुति दे और यत्नसे मंत्र जपे ॥ १३ ॥

देवदेव महाआरण्य माता वरुण पिता
शांडिल्यगोत्र वाहनभू अग्नेस्वाहा । ॐ
विद्या किल किल कटुस्वाहा । सर्वासां सिद्धीनां
स्वाहा । ॐ हुंषं लोकाय स्वाहा । रक्त-
तुंडायस्वाहा । अन्यगणेशमंत्रः । ॐ नज-
गजीक्षस्वामी ॐ नजगजीक्षस्वामी । इति
मंत्रं जपेच्चैव सहस्रैकं अष्टोत्तरं । सर्वकार्याणि
सिध्यंति पृथक् पृथगुदाहृतम् ॥ १४ ॥

द्यूतविजयं नृपस्य वश्यं वचनमान्यं च सं
ग्रामेश्वपराजितं पृथ्वीवशं तथा भवेत् ॥ १५ ॥
मनोवश्यं तथा लक्ष्मीक्षमौदास्यं याति
संशयम् ॥ बुद्धि प्राप्नोति चित्यं च गणे-

शस्य पूजनात् ।। १६ ।। अथ पूजनविधिं च होमस्य च विधिं तथा धूपं दीपं च नैवेद्यं दधिघृततिलं तथा ।। १७ ।। हवनस्याष्टगुणं च मंत्रं पठेच्च स्वाहया ।। तदनन्तरं जपं च कुर्याच्चैव विंशति ।। १८ ।।

यह मंत्र ११०८ वार जपे सब कार्यसिद्धि होय, द्यूतमें जय होय, राजा वश होय, राजाओंमें मान्य होय, संग्राममें जय होय, पृथ्वी वश होय, मन वश होय, लक्ष्मी वश होय, दास्यभाव दूर होय, बुद्धिप्राप्ति होय और चित्त शुद्ध होय यह सब गणेशके पूजनसे तथा मंत्र के जपनेसे होय ।। १४ ।। ।। १५ ।। १६ ।। १७ ।। १८ ।।

मंत्रः । जिभ्या आग अमृत बसै सो काम दृष्टि आगू हनुमत बसै सभा मोहु श्रीरामचंद्रं । मंत्रेणानेन विधिना मोहितं च जगत्त्रयम् ।। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन जपेन्मंत्रं समाहितम् ।। १९ ।।

इति श्रीअवस्थीप्रयागदत्तसुतरामचरणविरचिते रुद्रयामले चतुर्थः पटलः ।। ४ ।।

इन मंत्रोंको सावधान होकर जपे तो तीनों लोक वश होंय ।। १९ ।।

इति हिन्दीटीकायां चतुर्थः पटलः ।। ४ ।।

नवपंचनवेदौ च वत्सरे मार्गशीर्षके १८५९ ॥
कृष्णपक्षस्य द्वादश्यां बुधे ग्रंथसमाप्तकम् ॥ १॥
अवस्थिवंशे विख्यातो सर्वविद्यानिधिः शुचिः ॥
ब्रह्मण्यो धर्मवक्ता च ठाकुरप्रसादनामकः ॥ २ ॥
तस्य पुत्रौ च विख्यातौ ज्योतिश्शास्त्रप्रवीणकौ ॥
ज्येष्ठो रघ्घनलालश्च तिषालालकनिष्ठकः ॥ ३ ॥
रघ्घनलालस्य पुत्रो पर्मसुखसुसंज्ञकः ॥
ज्योतिशास्त्रे प्रवीणश्चशिष्यानध्यापयन्बहु ॥ ४ ॥
तस्य पुत्रौ प्रसूयेते लोके विख्यातकीर्तिकौ ॥
तयोर्ज्येष्ठो हि यो पुत्रो प्रयागदत्तसंज्ञकः ॥ ५ ॥
व्याकरणशास्त्रनिपुणः पुराणेषु प्रवर्तकः ॥
थस्ग्रंथ कर्ता सद्वैद्यो प्रतापी विमलद्युतिः ॥ ६ ॥
तस्य पुत्रास्त्रयो ह्यासन् लोकविश्रुतधार्मिकाः ॥
तेषां ज्येष्ठो मुन्नालालः सर्वशास्त्रप्रवर्तकः ॥ ७ ॥
कनिष्ठो भगवद्दासो भगवान्प्रशादेतिच ॥
किंचिद्धीतो हि विद्यायां गृहकार्यप्रवीणकः ॥ ८ ॥
मध्यमो रामचरणो भगवद्दासदासकः ॥
श्रीरामचरणांभोजे नितरां प्रीतिमुद्वहन् ॥ ९ ॥

तेनेदं कृतग्रंथं रुद्रयामलसंस्कृतम् ॥
नोदिते नंदरामेण रमुआपुरवासिना ॥ १० ॥
जिलाशीतापुरे तस्य तहसीलं च मिश्रिते ॥
डाकवेश्ममहोल्यां वै वशारोग्रामनामकः ॥ ११ ॥
नैमिषाद्वाय्व्यदेशे गोकर्णादानलेपि च ॥
चतुर्योजनमानेन तयोर्मध्ये हि वर्तते ॥ १२ ॥
यादृशं पुस्तकं ह्यस्ति तादृशं च कृतं मया ॥
मंत्राणां शुद्धमशुद्धे मम दोषो न दीयते ॥ १३ ॥

इति श्रीअवस्थीप्रयागदत्तसुतरामचरणविरचितं
हिन्दीटीकासहितं रुद्रयामलतन्त्रम् समाप्तम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" प्रेस,
७वीं खेतवाडी—बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" प्रेस
कल्याण-बम्बई.